



वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १६ अंक ३ सितम्बर २०१६

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द



हुतात्माओं को शतशः प्रणाम !



समझा है खेल शहीदों ने, अपना सर्वस्व लुटा देना ।
वीरों का यह मनोरंजन, अपना अस्तित्व गिटा देना ॥



हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के आर्य बलिदानी भाई इय्यामलालजी,
विष्णु भगवानजी, शिवचन्दजी, तथा मृत्युंशय्यापर बेदप्रकाशजी ।



संसद भवन में दयानंद का चित्र स्थापित हो !



संसदभवन में महर्षि
दयानंद का चित्र
स्थापित कराने हेतु
लोकसभाध्यक्ष श्रीमती
सुमित्रा महाजनजी को
निवेदन देते हुए सांसद
डॉ. सत्यपालसिंहजी,
चन्द्रकांतजी खैरे,
जगदम्बिका प्रसादजी,
डॉ. रमेश पोखरियाल
आदि ।

हु. धर्मप्रकाश बलिदान दिवस

बसवकल्याण में
हु. धर्मप्रकाश बलिदान
दिवस पर आयोजित
स्मृतियज्ञ का दृश्य।



बलिदान दिवस के
मुख्य समारोह में
मंचपर विराजमान
आमंत्रित विद्वान,
उपदेशक एवं कर्नाटक
सभा के प्रधान श्री
सुभाषजी आष्टीकर
आदि।



महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र



वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७
दयानन्दाब्द १९३

कलि संवत् ५११७
भाद्रपद

विक्रम संवत् २०७३
सितम्बर २०१६

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ. ब्रह्ममुनि
(९४२९९५९०४)

सम्पादक
डॉ. नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रा. देवदत्त तुंगार, प्रा. ओमप्रकाश होलीकर,
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

* हिन्दी विभाग *

- १) कोषर्षी की निर्भया-कारण व उपाय(संपादकीय) ४
- २) हैदराबाद का संघर्ष और आर्य समाज..... ६
- ३) नेपाल में अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन..... ९
- ४) राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में दयानन्द का योगदान ९
- ५) श्रावणी-विद्वानों व आर्यसमाजों का धन्यवाद १५
- ६) समाचार दर्पण १६

* मराठी विभाग *

- १) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी..... १९
- २) हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामात आर्यसमाजाचे योगदान..... २०
- ३) राज्यभरात श्रावणी वेदप्रचार २८
- ४) शोकवार्ता ३१
- ५) वाताविशेष ३४

अ
नु
क
म

* प्रकाशक *

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु. १००/-

आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

वैदिक गर्जना-विशेषांक ***

३

*** सितम्बर-२०१६

‘कामातुराणां न भयं न लज्जा।’ कामवासना के आधीन होती दुनिया को आज न तो किसी बात भय रहा है और न ही शर्म ! बदलता आधुनिक परिवेश मानव के लिए खतरे की निशानी बनता देख अछे लोग घुटन महसूस कर रहे हैं। कुवासना के कारण होनेवाले दुष्परिणामों से सामान्य लोगों का जीना दुष्कर हो गया है। लड़कियों व महिलाओं पर आये दिन होनेवाले यौनशोषण व अत्याचारों के कारण समाज में चिन्ता व भय का वातावरण है। पुरुषों द्वारा नारी उत्पीड़न की घटनाओं ने अब कोई भी जगह खाली नहीं छोड़ी है। देहातों व शहरों के रास्तों, चौराहों, कार्यालयों और अब तो यहां तक घरों व शिक्षालयों जैसे पवित्र स्थानों पर भी अनैतिक प्रसंगों व उससे जुड़ी चारदातों ने जगह ली है। नैतिक सुरक्षा की दृष्टि से अब वह अनुकूल वातावरण नहीं रहा, जो कि, किसी समय था।

तीन वर्ष पूर्व दिल्ली में हुए निर्भया काण्ड ने सारे देश में हडकम्प मचा दिया था। उस समय सरकार द्वारा ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए कानून भी बनाया गया। लगता था कि अब आगे इस तरह की घटनाएँ नहीं होंगी ! किन्तु बलात्कार, अपहरण, यौनशोषण जैसी घटनाओं में आज बढोतरी ही हो रही है। अब तो भाई-बहन, पिता-पुत्री, शिक्षक-छात्रा के पवित्र सम्बन्ध भी कलंकित होते नजर आ रहे हैं, तो विश्वास किन पर करें ? जुलाई माह में महाराष्ट्र के यवतमाल नगर के एक अंग्रेजी विद्यालय में अध्यापकों ने अपने ही छात्राओं का यौनशोषण किया, तब अभिभावकों को सामूहिक रूपसे कडा आन्दोलन करना पडा। इस घटना के सप्ताह बाद ही पुनः एक बार निर्भया काण्ड की पुनरावृत्ति हुई। महाराष्ट्र के कोपर्डी नामक गांव में स्कूली छात्रा पर बलात्कार कर उसकी की गयी क्रूरतम हत्या से सम्पूर्ण राज्य में हाहाकार मच गया है। अहमदनगर के कर्जत तालुके में यह गांव आता है। दो माह पूर्व दि. १३ जुलाई को नौवी कक्षा में अध्ययनरत इस बालिका पर तीन नराधमों ने पाशवी अत्याचार किये। यह घटना इतनी भयावह थी कि सुननेवालों के दिल काँप उठे ! इस जघन्य काण्ड से स्त्री-पुरुष समानता व स्वतंत्रता की झूठी वकालत करनेवालों की बोलती बन्द हुई है। अखबारों के पन्ने पलटेंगे, तो इस प्रकार के अनगिनत दुर्व्यवहार जगह-जगह व्यापक बनते नजर आयेंगे। वासना से ग्रस्त पुरुषवृत्ति ने तीन से चार वर्ष की बालिकाओं से लेकर माँ-दादीमाँ की आयुवाली वृद्ध महिलाओं को भी नहीं छोडा। इसी अहमदनगर जिले में दो-तीन वर्षों में ऐसी ४-५ घटनाएं घटी हैं।

यौन शोषण से जुडी बलात्कार आदि घटनाएं बार-बार क्यों होती है ? इसके मूल में छिपी बुरी कामवृत्ति को बढावा देनेवाली बातों की रोकथाम पर किसी का ध्यान नहीं जाता अथवा ऐसी समस्याओं की जडतक कोई पहुंचना ही नहीं चाहता। राजनेता, शिक्षाविद् अथवा मिडियावाले अपराधियों को कडा दण्ड या फांसी देने की बात करते हैं। हर कोई नया सुझाव देता है। कोई कानून या पुलिस द्वारा सुरक्षा की माँग करता है, तो कोई कन्याओं को हथियार देने की बात करता

है, तो कोई शिक्षा व्यवस्था में यौन पाठ्यक्रम लागू करने की शिफारीश करता है। ये सारी बातें बाहरी हैं। दुष्टों को कडा दंड तो अवश्य मिलना ही चाहिए, किन्तु इसके साथ ही समाज को नैतिकता, सदाचार व शुभसंस्कारों का भी पाठ पढ़ाना जरूरी है। आज की व्यवस्था ने इसकी ओर पूर्णतः अनदेखी की है। सच्चरित्रता की उपेक्षा के कारण ही सारी मानवजाति इस तरह के दुःख झेल रही है। अनुमानतः अपने ही देश में प्रति २२ मिनटों में एक बलात्कार होता है, तो मृत्युदण्ड किन्हें दिया जाये? सद्बिचारों के प्रसार के लिए नैतिकता को बढ़ावा व अनैतिकता पर रोक लगानी अत्यावश्यक है। वस्तुतः नारी शोषण से सम्बन्धित घटनाओं की जड़ में आज की उन्मुक्त व्यवस्था व कुशिक्षा पद्धति है। जब तक घर, समाज व शिक्षालयों में सदाचार, सुसंस्कार व सभ्यता का पाठ नहीं पढ़ाया जायेगा, तब तक कोपर्डी जैसी घटनाएँ होती रहेंगी। टी.वी. चैनलों, मोबाईल, कैंफे इंटरनेट तथा अश्लील फिल्मों द्वारा कामवासना को बढ़ावा देनेवाली सामग्री खुले आम परोसी जाने पर परिणाम क्या निकलेंगे? एका संस्था के सर्वेक्षण के अनुसार छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियाँ अपनी दसवी तक की पढ़ाई होने तक २० हजार घंटों तक कैंफे इंटरनेट व टी.वी. के सामने होते हैं। वे १५ हजार के आसपास हत्याएँ देखते हैं, १२ हजार बलात्कार, १ लाख से भी अधिक ड्रग्स, पोर्नोग्राफी तथा अल्कोहोल से संबंधित दृश्य देखते हैं। स्मार्ट मोबाईल पर देश के करोड़ों बच्चे-बच्चियाँ व युवक-युवतियाँ ज्ञान-विज्ञान के स्थान पर अश्लिल चित्र सामग्री खुले आम देख रहे हैं। तब इन बच्चों के मन व बुद्धि क्यों नहीं बिगड़ेगी? शास्त्रों में कहा है- 'अग्निकुण्डसमा नारी घृतकुम्भसमो नरः।' जब ये लड़के व लड़कियाँ एकत्र आयेंगे और मुक्त रूप में साथ-साथ यथेच्छ रहेंगे, तो निश्चित ही नारीशोषण, बलात्कार, अपहरण आदि घटनाएँ घटती ही रहेगी और समाज व राष्ट्र का नैतिक अधःपतन होता ही रहेगा। ऐसी स्थिति में हमें महर्षि स्वामी दयानन्द के विचार प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धतिद्वारा लड़के-लड़कियों को सर्वथा अलग रहके भी सुसंस्कारित होने की बात कही थी। दोनों के शिक्षालय दूर अंतर पर रखने तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य के पालन का संदेश दिया था।

कोपर्डी की पीड़िता कन्या की मानवनिर्मित जाति मराठा होने से और अपराधकर्मी दलित होने से अब कोपर्डी की घटना को जातिगत रूप दिया जा रहा है। (इन जाति व पन्थव्यवस्था को हमारी मान्यता नहीं है।) मराठा लोग लाखों की संख्या में जगह-जगह शान्ति मार्च निकाल रहे हैं और निषेध आन्दोलनों के माध्यम से अँट्रासिटी कानून को रद्द करने की मांग कर रहे हैं। इस बात को नकारा नहीं जा सकता की, अँट्रासिटी कानून का दुरुपयोग भी हो रहा है। इस लिए उसमें सुधार होना भी जरूरी है। ऐसी स्थिति में दलित नेता भी अपने तीखे तेवर दिखाते हुए जहरीले बयान दे रहे हैं। क्या इससे समस्या का समाधान हो सकता है? अच्छाई व बुराई के पीछे क्या कोई मनुष्यकृत जाति या पंथ होती है? चोरी, डकैती व बलात्कार आदि के कृत्यों के लिए किसी जाति विशेष को जिम्मेदार ठहराना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? यह तो समस्या के समाधान से दूर जाना है।

‘छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।’

- डॉ. नयनकुमार आचार्य

हैदराबाद का संघर्ष और आर्यसमाज

- प्रा.डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे

हैदराबाद रियासत के अंतिम निजाम मीर उस्मान अली खान के पिता मीर महबूब अलीखान परधर्मसहिष्णु और उदारमतवादी विचारोंवाले शासक थे । उन्हीं के शासनकाल में अनेक सामाजिक व धार्मिक संगठनों की स्थापना हुई । मुंबई के काकडवाडी में सन् १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना हुई और उसके पाँच वर्ष बाद मराठवाडा के किल्ले धारूर गाँव में सन् १८८० में आर्यसमाज का ध्वज लहराया । उसके १२ साल बाद हैदराबाद के सुलतान बाजार में सन् १८९२ में आर्यसमाज की स्थापना की गयी । इसके प्रेरक स्वामी दयानंद के शिष्य प्रज्ञापक्षु श्री गिरानन्दजी महाराज थे । आपका प्रभाव रिसायत में कुछ इस तरह रहा कि यहाँ के सुधारवादी विचारधारा के कई प्रतिष्ठित एवं सामान्य लोगों ने आर्यसमाज की स्थापना में भाग लिया । इनमें रायकुवर बहादुर, कामताप्रसादजी मिश्र, लक्ष्मणजी पंडित, आदिपुडी सोमनाथराव तथा पंडित हरिहरदेवजी आदि व्यक्ति प्रमुख थे । उस्मानाबाद निवासी श्री श्रीनिवासजी, जो कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति श्री नरदेवरावजी वेदतीर्थ के पिता थे, उनके व्याख्यानों से प्रभावित होकर अनेकों

पौराणिक विद्वान आर्यसमाज की ओर आकर्षित होने लगे। श्रीनिवासजी के प्रयत्नों से राज्य में आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार को बल मिला । उन्हीं के प्रयत्नों से रायकुंवर बहादुर जो कभी नास्तिक कहलाते थे, आर्यसमाज की ओर आकृष्ट होते चले गए ।

आर्यसमाज की स्थापना रियासत में पिछड़े और पददलित हिन्दुओं को संगठित करने एवं उनमें धार्मिक एवं सामाजिक जागृति निर्माण करने हेतु हुई । उस समय स्वप्न में भी यह नहीं सोचा जा सकता था कि आर्यसमाज निजाम की सत्ता के वटवृक्ष को उखाड़ फेंकने के इरादे से स्थापित हुआ है । जबतक सातवें निजाम मीर उस्मान अलीखान हैदराबाद की राजगद्दी पर आसीन नहीं थे, तब तक रियासत में सबकुछ ठिकठाक चल रहा था । लेकिन जैसे ही १९११ ईसवी में आसीफजाही घराने के ये आखिरी चिराग आला हजरत मीर उस्मान अलीखान राजगद्दीपर आरोढ़ हुए, सारी रियासत का माहौल ही बदल गया । आर्यसमाजों के क्रियाकलापों पर प्रतिबन्ध लगने लगे । हवन, जुलूस तथा भवननिर्माण पर रोक ला दी गयी । उदाहरण के तौर पर एक-दो हुक्मनामे पेश है -

१) बनाम बाबुलाल तेली साकिज हिंगोली को इस आधार पर ताकी द दी जाती है कि आपकी दुकान... उसमें आर्यसमाज की ओर से बिना इजाजत हवनकुण्ड बना। प्रभु प्रार्थना की जा रही है। यह अहकाम के खिलाफ है। इसलिए आपको जताया जाता है कि दुकान में किसी भी प्रकार की प्रार्थना नहीं होनी चाहिए। खिलाफवर्जी में जाहते के अनुसार कार्यवाही की जाएगी। एक प्रत दस्तखत करके वापस भेज दीजिएगा फिर कोई जवाब नहीं सुना जायेगा।

तहसीलदार बनाजम
अमूरे मजहबी, हिंगोली

२) डी. आर. दास आर्यसमाज लातूर बमुकदमा सदर तरकीम है कि आपके समाज के किन-किन मवाजियात में हवनकुण्ड कायम हैं? नमूद तरख्ता मुनसलिफ हजाह खानापूरी करके वापस की जाए।

हस्ताक्षर
मंतजम कोतवाली, औरसा

उपर्युक्त प्रकार के सैकड़ों हुकुमनामे की निरीह जनता किसी के आने की आस आये दिन हिंदू आर्यजनता के हाथों में थमा में आँखे बिछाए बैठी थी। दिये जाते थे, जिससे कि रियासत की प्रजा ऐसे घोर बिकट समय में आर्यसमाज ने यहाँ की प्रजा को धैर्य बँधाया। धार्मिक नागरिक प्रतिबन्धों से परेशान हो आर्यसमाज के झण्डे तले आकर यहाँ की चुकी थी। एक तरफ निजामी सरकार आर्यसमाज के झण्डे तले आकर यहाँ की मुस्लिमेतर प्रजा को कायदे कानून से फटकार जनता ने एक सुकून की साँस ली। सन लगा रही थी, तो दूसरी तरफ इतेहादुल १९४० की जनगणना के समय रियासत में मुसल्मिन यह कट्टर मुस्लिम धार्मिक संस्था चालिस हजार सदस्य इस संस्था में सक्रिय हिन्दू प्रजापर जुल्म ढाह रही थी। इस तरह थे और लगभग दो सौ के करीब आर्यसमाज यहाँ के हिन्दुओं के लिए जीना मतलब मौत की शाखाएँ थीं। जिस तरह भगवान श्रीकृष्णजी ने महाभारत युद्ध रोकने के लिए सेकड़ों प्रयत्न किये। दुर्योधन को अनेकों से खेलना था। उनके आगे देखें तो एक तरफ बार समझाया। उसी तरह 'आर्यसत्याग्रह' कूँआ था और पीछे बावडी थी। किधर जाँ ? कहाँ जाँ ? इस असमंजस में यहाँ

न होने पाये इसके लिए सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियों ने कईबार प्रयत्न किये। इनमें महात्मा नारायण स्वामी, प्रो. सुधाकर, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, स्वामी स्वतंत्रतानन्दजी, लाला देशबन्धुजी, पं. नरेन्द्र तथा स्थानिक नेता प्रमुख रहे हैं। लेकिन सत्ता के पद में मदमस्त निजाम सरकार के कानों में जूँ तक नहीं रेंगी। सन १९३४ से लगातार हो रहे अत्याचारों, अन्यायों एवं आर्य नेताओं को देश से निकाल दिये जाने के बारे में सैकड़ों प्रयत्न किये। उनके जाने के बावजूद निजाम सरकार का रवैया नहीं बदला। जब पं. रामचन्द्र देहलवी को रियासत से देश निकाला देकर हद्दपार किया गया, तब मजबूर होकर सार्वदेशिक सभा को आर्यरक्षा समिति स्थापन करनी पड़ी और इस तरह रियासत में आर्य सत्याग्रह की रणभेरी बज गयी।

जब समझौतों के सारे मार्ग बन्द हो चुके, तो मजबूरन आर्यों को हैदराबाद की ओर कूंच करना पड़ा। उसके विस्तार में न जाता हुआ इसके लिए मेरी पुस्तक 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास' देखें।

इतना ही कहना चाहूँगा कि स्थानिक आर्यों एवं उत्तर भारत से आये हुए आर्यों के झुण्ड के झुण्ड से निजाम सरकार के कान खड़े हो गये। उनकी रातों की नींद गायब हो गयी। उन्हें स्वप्न में भी यह अन्दाजा नहीं था कि इस तरह लोगों के रेलों के रेलों चले आर्येंगें। रियासत की जेलें पूरी तरह से भर गयी थीं। सत्याग्रहियों को रखें तो कहाँ रखें? उन्हें अस्तबलों, धर्मशालाओं एवं स्कूलों में बन्द कर रखना पड़ा। पूरी हैदराबाद रियासत जेलखाना बन गयी।

सन १९३८-३९ में लगभग सात मास तक चले। इस सत्याग्रह ने निजाम सरकार को सोचने के लिए बाध्य कर दिया कि, रियासत में हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आर्यसमाज की माँगें सही हैं। कश्मीर के शेख अब्दुल्ला ने उस समय कहा था कि - 'आर्यसमाजियों की माँगें जायज हैं।'

लगभग १२ हजार सत्याग्रही जेलों में बन्द थे और ४ हजार प्रतीक्षा में थे।

- भारतोदय प्रतिष्ठाण, सीतारामनगर, लातूर

मो. ९९२२२५५५९७

अजमेर में ऋषिमेला

परोपकारिणी सभा की ओर से ऋषि उद्यान, अजमेर (राज.) में आगामी ४, ५, ६ नवम्बर २०१६ को ऋषि दयानन्द बलिदान समारोह का आयोजन हो रहा है। इस अवसर पर ऋषिवर दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पण करने हेतु आर्यजगत् के सन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक, आर्यनेता तथा कार्यकर्तागण पधार रहे हैं। कृपया आप भी सपरिवार इस ऋषि मेले पर पधारकर महर्षि को श्रद्धांजली अर्पण करें।

दि. २०, २१, २२ अक्टूबर २०१६ को

नेपाल में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

- डॉ. माधवप्रसाद उपाध्याय (संयोजक)

नेपाल प्राचीन ऋषिमुनियों की पवित्र तपस्थली रही है। कैलाशपति भगवान् शिव ने इसी पवित्र भूमि में साधना और योगाभ्यास करके संसार को आलोकित किया था। इस क्षेत्र की विभूति राजर्षि जनक एवं माता सीता की साधना और चरित्र का इतिहास संसार के लिए आज भी प्रेरणास्पद है। इसी धराधाम में भगवान् बुद्ध ने जन्म लेकर संसार को शान्ति और अहिंसा का पाठ पढ़ाया था। गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियों, महर्षि याज्ञवल्क्य, महर्षि शृङ्गी, पाणिनि, पतंजलि जैसे ज्ञान और चेतना के आलोक से संसार को आत्मिक साधना, शब्द साधना और सामाजिक उत्थान के मंत्रों की साधना एवं सिद्धि करने वाली महत्तम वैशिष्ट्य से परिपूर्ण तपःपूत तपस्वियों की साधना स्थली है नेपाल।

ऐसे पवित्र तपःस्थली के कालान्तर में समाज में जो अन्धविश्वास, भेद-भाव, छुआ-छूत, जातीयता जैसी समस्याएँ दिखने लगीं उनका निराकरण करके समाज को समुन्नति के मार्ग में आगे बढ़ाने के लिए अमर शहीद महात्मा शुक्रराज शास्त्री आदि युगपुरुषों ने अपना जीवन उत्सर्ग किया था। शुक्रराज के पिता पं. माधवराज जोशी

ने १९वीं शताब्दी के महान समाजसुधारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन समाज के लिए अर्पण किया था। उससे इस देश के इतिहास को नये विचार, चेतना, एवं दृष्टि प्राप्त हुई है। उन्होंने ही नेपाल में सबसे पहले विक्रम संवत् १९५३ में आर्यसमाज की स्थापना करके सामाजिक सेवा के अभियान को आगे बढ़ाया था।

इसी सन्दर्भ में वैदिक संस्कृति के यथार्थ स्वरूप की प्रस्तुति के साथ ही सामाजिक जागरण, युवावर्ग में चरित्र और सदाचार के भाव की अभिवृद्धि, भौतिक, बौद्धिक और आर्थिक विकास के सम्भावनाओं की खोज आदि सामयिक चिन्तन द्वारा संसार में नई चेतना, उत्साह और प्रेरणा का भाव प्रवाहित करने के उद्देश्य से नेपाल आर्यसमाज द्वारा नेपाल की राजधानी काठमांडू में तीन दिवसीय 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' किया जा रहा है। वर्ण, लिंग, क्षेत्र आदि के आधार में किसी भेद-भाव विना विश्व के अनेकों देश के हजारों प्रतिनिधियों की सहभागिता में होने वाले इस महासम्मेलन के प्रमुख आकर्षण निम्नानुसार रहेंगे -

* योग, ध्यान शिविर के माध्यम से मानव समुदाय के शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहयोग।

* वैदिक यज्ञ द्वारा वातावरण शुद्धि एवं पर्यावरण प्रदूषण के विरुद्ध जन चेतना अभिवृद्धि का व्यावहारिक अभ्यास।

* वैदिक भाषा और संस्कृति के अध्ययन-अध्यापन की परिस्थिति निर्माण द्वारा नेपाल के प्राचीन गौरव को समुद्घाटित करना।

* गाय के महत्त्व का प्रदर्शन, जैविक खेती की ओर जनमानस की प्रवृत्ति का विकास, गौ वंश का प्रदर्शन आदि में चेतना का विकास।

* हिमालय क्षेत्र की जड़ि-बुटियों का वैशिष्ट्य, प्रशोधन प्रक्रिया आदि के साथ ही जड़ि-बुटियों के माध्यम से समृद्धि की सम्भावनाओं का ज्ञान।

* वैदिक संस्कृति के अन्तर्गत विमान विद्या, गणित विद्या, भौतिकी, रसायन शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि व्यावहारिक जीवन की

अनेक विधाओं को उच्च स्तर प्रदान करके समुन्नत समाज निर्माण की सम्भावनाओं की प्रस्तुति।

* विश्वभर में फैले हुए वैदिक संस्कृति के उपासक व्यक्तियों के बीच में भावनात्मक आत्मीय सम्बन्ध की स्थापना।

* भौतिक विकास में वैदिक संस्कृति से होनेवाले सम्भावित योगदान का व्यावहारिक अभ्यास और प्रदर्शन आदि।

इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर देश-विदेश के विशिष्ट विद्वान, उपदेशक, सुधारक, शिक्षासेवी, समाजसेवी आदि समाज के विभिन्न क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ सम्पर्क एवं व्यावहारिक उपदेश प्राप्त होंगे।

इस महान कार्यक्रम में सपरिवार, इष्टमित्रों सहित उपस्थित होकर तन-मन-धन एवं कर्म से सहयोग करके पुण्य लाभ प्राप्त करें एवं समुन्नत पवित्र मानव समाज की उन्नति में योगदान करें। इसके लिए आप सबका हार्दिक आह्वान करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन (दि. २०, २१, २२ अक्तुबर २०१६)

स्थान - टुंडिखेल, काठमांडो (नेपाल)

- * विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क - कार्यालय-००९७७-१-४४८७७९४
 १) डॉ. माधवप्रसाद उपाध्याय (संयोजक)-००९७७-९८४१३०३४४० २) डॉ. तारानाथ मैनाली - ००९७७-९८५१०७७६१३ ३) अरुणप्रकाश वर्मा-९८१००८६७५९
 ४) एस. पी. सिंह-९५४००४०३२४ ५) शिवकुमार मदान-९३१०४७४९७९

* महासम्मेलन की वेबसाइट-www.nepalaryasamaj.org

राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रसार में दयानंद का योगदान

- डॉ.सौ.मंजुलता विद्यार्थी(मदनसुरे)

ऋषि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती थी, वे संस्कृत के प्रकाण्ड-पंडित थे। वे देववाणी संस्कृत से राष्ट्रवाणी हिन्दी में आये। गुरु विरजानन्दजी के पास अध्ययन करने के उपरान्त वे लगभग २० वर्ष तक कार्यक्षेत्र में डटे रहे, किन्तु इन २० वर्षों में भी उनका वास्तविक कार्यकाल अन्तिम दस वर्ष (सं. १९३१ से १९४० वि.तक) का है। प्रारम्भिक दस वर्षों में वे केवल कोपीनमात्रधारी, निःसंग और निर्लेप होकर परमहंसावस्था में ही विचरते रहे तथा करिष्यमाण महान कार्य के योग्य अपने को बनाने के लिए कठोर तप करते रहे। यद्यपि इन वर्षों में भी प्रायः मौखिक धर्मोपदेशक और मूर्तिपूजा आदि पौराणिक मतों का खण्डन करते रहे, तथापि इस काल को तपस्या काल ही कहा जा सकता है। इन प्रारम्भिक दस वर्षों में जो कुछ भी उपदेश कार्य किया, वह सब संस्कृतभाषा में ही किया और संस्कृत में ४-५ छोटे-छोटे ग्रन्थ प्रकाशित किये। वेद एवं मूर्तिपूजा विषयक उनके शास्त्रार्थ भी उस समय संस्कृत में ही हुए थे, जिन्होंने हरिद्वार, काशी, प्रयाग, कलकत्ता, बम्बई आदि के पण्डितसमूह में पकम्पन उत्पन्न कर दिया था। उस समय उनका वक्तृत्व संस्कृत में ही निखरता था।

वे संस्कृत में ही विचार करते थे और संस्कृत में ही अपने विचारों को प्रस्तुत करते थे। प्रचार की भाषा भी संस्कृत ही बनी और लेखन की भाषा भी संस्कृत की ठहरी।

१८७२ ई. में बंगाली नेताओं के सम्पर्क में आने पर ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रीय दृष्टि से हिन्दी के महत्त्व का अनुभव किया। कलकत्ता प्रवास के दौरान ब्राह्मसमाज के नेता तथा बैरिस्टर श्री केशवचन्द्र सेन जब ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आये तो वे ऋषि के क्रान्तिकारी विचारों से रोमांचित हो उठे थे और उनकी हार्दिक इच्छा थी कि महर्षि के विचार सामान्य जनता सुने और समझे तथा जीवन में अपनाये। इसीलिए उन्होंने महर्षि दयानन्द को अपना प्रचार माध्यम बदलने तथा हिन्दी को अपनाने की सलाह दी। ऋषि दयानन्द ने बाबू केशवचन्द्र सेन की सलाह मान ली और एक नई भाषा को अपनाने का निश्चय कर लिया। यह कितना कठिन कार्य था, इसकी कल्पना वहीं की जा सकती युवावस्था तक जिस भाषा से अनभिज्ञ रहे हों, उसे प्रौढावस्था में सीखना और उसपर अधिकार प्राप्त करना आसान नहीं था, किन्तु उन्होंने निःसंकोच रूप से हिन्दी को अपनाया और

उसे राष्ट्रभाषा घोषित किया। फिर चाहे वे महाराष्ट्र में गये या पंजाब में, गुजरात में अथवा बंगाल में, सर्वत्र हिन्दी को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उन्होंने देश के विभिन्न भागों का भ्रमण करते हुए स्वयं भी अनुभव कर लिया था कि अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए एक ऐसी भाषा का आश्रय लिया जाना चाहिए जिससे उत्तर, पश्चिम, पूर्व सभी जगह काम चलाया जा सके, ऐसी भाषा हिन्दी ही थी। इसलिए बाबू केशवचन्द्र सेन के परामर्श पर उन्होंने शीघ्र ही अपने भाषण व लेखन में हिन्दी को केवल अपनाया ही नहीं, अपितु उसे राष्ट्रभाषा के उच्च पद तक पहुँचा दिया। हिन्दी को 'आर्यभाषा' नाम दिया। ऋषि दयानन्द का आर्यसमाज इस प्रकार का पहला आन्दोलन था, जिसमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सर्वप्रथम प्रयास किया गया। उन्होंने घोषणा की कि प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिन्दी (आर्यभाषा) पढ़ना आवश्यक है और आर्यभाषा ही समस्त देश की भाषा होनी चाहिए।

ऋषि दयानन्द को १८८३ ई. तक मृत्युपर्यन्त हिन्दी में लिखने के लिए केवल आठ वर्ष का समय मिला। हिन्दी में लिखा उनका पहला महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ही था। सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त उनकी छोटी-बड़ी इतनी अधिक रचनाएँ मिलती हैं कि उन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि

उन्होंने आठ वर्ष की अल्प अवधि में इतने विशाल साहित्य का सृजन किस प्रकार किया? वेदों का भाष्य हिन्दी में लिखा और उनका अनुसरण करते हुए अनेक विद्वान तथा साहित्यकारों ने 'राष्ट्रभाषा' के वाङ्मय को वैदिक साहित्य से परिपूर्ण कर दिया। उन्होंने सिर्फ हिन्दी का व्यवहार अपनी वाणी तथा लेखनी से ही नहीं, अपितु उसे राष्ट्रभाषा के श्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित किये जाने के अधिकारों को मान्यता दी और दिलवायी। ऋषि दयानन्द ने अपने समस्त राष्ट्रीय कार्यों के लिए हिन्दी को अनिवार्य कर दिया था। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदांगप्रकाश आदि ग्रन्थ लिखकर उन्होंने राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित किया। वे अपने समय के राष्ट्रभाषा के श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आये। उनके ग्रन्थों में न केवल धार्मिक और दार्शनिक अपितु व्यावहारिक और लौकिक विषयों का भी प्रतिपादन हुआ है। हिन्दी की खड़ी बोली में गम्भीर और दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति का पहला प्रयास ऋषि दयानन्द द्वारा ही किया गया। इतना ही नहीं, उनके साहित्य में हिन्दी गद्य की सुबोध, सरल और रोचक शैली का भी विकास हुआ है।

उस समय का वातावरण हिन्दी के नितान्त विपरीत था। ऐसी परिस्थिति में हिन्दी का पक्ष लेना और उसके प्रचार का

प्रयत्न करना अत्यधिक साहस का कार्य था । इसके अतिरिक्त मुसलमानों और अंग्रेज शासकों ने हिन्दू जनता के मस्तिष्क में एकेश्वरवाद का महत्त्व भी जमा दिया था । उसी की ओट में अपनी भाषा व मत का प्रचार कर रहे थे । शिक्षित और अशिक्षित सभी हिन्दू उनके मत के कथित एकेश्वरवाद, भ्रातृत्व और समानता की ओर आकृष्ट हो रहे थे । ऐसे समय में ऋषि दयानन्द ने धर्म का सच्चा स्वरूप लोगों के सामने रखा । उन्होंने मूर्तिपूजा एवं अनाचारों का खण्डन कर वैदिक एकेश्वरवाद तथा गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर्ण-व्यवस्था द्वारा समानता का स्वरूप प्रस्तुत किया । उससे शिक्षित जनता प्रभावित हुई । ऋषि दयानन्द पहले शिक्षित जनता और पण्डितों के मध्य संस्कृतभाषा में ही व्याख्यान और शास्त्रार्थ द्वारा प्रचार करते रहे थे, परन्तु प्रचलित हिन्दी की व्यापकता का ध्यान रखकर उन्होंने हिन्दी भाषण और लेखन का अभ्यास किया ।

* हिन्दी के प्रति ऋषि का दृष्टिकोण

जिस समय हिन्दी को 'भद्दी बोली', 'गंवारु भाषा' कहा जा रहा था, उस समय ऋषि दयानन्द ने हिन्दी भाषा को 'आर्यभाषा' के गरिमामय नाम से अभिहित किया था । 'यह आर्यभाषा नाम निःसन्देह अधिक वैज्ञानिक तथा मध्यदेशीय संस्कृति के अधिक निकट था।' ऋषि दयानन्द ने सन १८७३ में

बाबू केशवचन्द्र सेन के परामर्श से जनभाषा हिन्दी को अपनाया। उनकी दृष्टि में उनके 'सन्देश को राजमहलों से लेकर गरीब की झोपड़ी तक पहुँचानेवाली भाषा हिन्दी ही थी।' हिन्दी की सम्पर्क-क्षमता को देखकर ही उन्होंने उसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया । राष्ट्रीय संस्कृति को अपने में सहेजनेवाली भाषा भी हिन्दी ही थी।

* ऋषि दयानन्द की स्वयं की कठिनता

ऋषि की मातृभाषा गुजराती थी, संस्कृत में भाषण देने, लिखने और शास्त्रार्थ करने के वे अभ्यस्त थे, अतः हिन्दी प्रचारमार्ग में न केवल बाह्य समस्याएँ थी, अपितु आन्तरिक कठिनाइयाँ भी थी। उन्हें हिन्दी में बोलने और लिखने का विशिष्ट अभ्यास करना पड़ा । उनका सर्वप्रथम हिन्दी में भाषण मई सन १८७४ ई. में काशी में हुआ। बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपध्याय ने लिखा है - 'जिस दिन महाराज ने पहला व्याख्यान दिया, उस दिन पहले से ही सूचना दे दी थी कि व्याख्यान (हिन्दी) भाषा में होगा । व्याख्यान (हिन्दी) भाषा में ही हुआ, परन्तु संस्कृत बोलने के अभ्यास और भाषा (हिन्दी) बोलने के अनभ्यास के कारण व्याख्यान में वाक्य-के-वाक्य संस्कृत में बोल गये।'

* राष्ट्रभाषा बनाने का क्रियात्मक पहलू
हिन्दी भाषण द्वारा ऋषि दयानन्द जनता

के सीधे संपर्क में आये और उन्हें अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार धर्म-प्रचार के साथ-साथ आर्यभाषा (हिन्दी) के प्रचारका श्रीगणेश हुआ। उन्होंने आर्यभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वप्न ही नहीं देखा अपितु, उसके लिए क्रियात्मक प्रयत्न किये।

स्वामीजीने सन १९७४ से आगे अपने सारे व्याख्यान हिंदी में ही दिये। अधिकतर शास्त्रार्थ राष्ट्रभाषा में ही किये तथा अपने पत्र और विज्ञापन के लिए भी हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया। इतना ही नहीं राजाओं

तथा अन्य सुधारकों के साथ जब भी उनका वार्तालाप हुआ, वह हिंदी में ही हुआ। इस तरह राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार में वेदोद्धारक महर्षी स्वामी दयानंद का अत्यधिक योगदान रहा है। (लेखिका के शोधग्रंथ-‘ऋषि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन’ से साभार)



- ‘श्रुति-सौरभ’, अभियंता
कॉलनी, धन्वन्तरी नगर,
उमरी, अकोला



महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा का शुभ निश्चय स्वामी श्रद्धानन्द (हरिश्चंद्र गुरुजी) जन्मशताब्दी समारोह



अनेकों छात्रों एवं नवयुवकों को अपने मधुर उपदेश वचनों से मानवता का पाठ पढ़ाकर उन्हें वैदिक धर्म में सुदीक्षित करनेवाले महाराष्ट्र के तपस्वी सन्यासी एवम् प्रान्तिय सभा के आधारस्तंभ पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) इस वर्ष अपनी आयु के ९८ वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। आगामी एक वर्ष के बाद सन २०१८ में उनका जन्मशताब्दी आ रहा है। स्वामीजी के गौरव में यह वर्ष जन्मशताब्दी के रूप में बड़े हर्ष उल्हास के साथ मनाया जाएगा। विशाल समारोह के साथ विविध सम्मेलन, शिविर, संगोष्ठी आदि कार्यक्रम भी होंगे। स्वामीजी के अनेकों शिष्य व उनके प्रति स्नेहभाव रखनेवाले अनेकों महानुभावों को इस जन्मशताब्दी समारोह में एकत्र आने का सुअवसर प्राप्त होगा। आर्यजगत् के सन्यासी, उच्च कोटी के विद्वान, लेखक, धर्मात्मा एवं कार्यकर्ता भी इस समारोह में पधारेगें।

धर्माबाद में दि. २८ अगस्त २०१६ को सम्पन्न हुई महाराष्ट्र सभा की त्रैमासिक अतरंग बैठक में उपरोक्त निर्णय लिया गया।

मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान(श्रावणी वेदप्रचार)

सभाद्वारा विद्वानों व आर्यसमाजों के धन्यवाद

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में राज्य की लगभग १२५ आर्यसमाजों के लिए श्रावणी वेदप्रचार का आयोजन हुआ। मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान के अन्तर्गत दि. ३ से ३१ अगस्त २०१६ के दौरान विभिन्न आर्य समाजों में ये श्रावणी पर्व मनाये गये। इस वर्ष महाराष्ट्र में वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ा था। इस प्राकृतिक विपदा के कारण देहातों की आर्य समाजों आर्थिक दृष्टि से सक्षम नहीं थी। साथ ही मार्च २०१६ में सम्पन्न हुए १६ ज्येष्ठ आर्यसेवकों के विशाल गौरव समारोह के कारण दानदाताओं व आर्यसमाजों ने अपनी दाननिधियाँ बड़े पैमाने पर प्रदान की थी। तथा कुछ स्थानों पर पर्जन्यवृष्टि यज्ञों का भी आयोजन हुआ था। इन सभी कारणों से आर्य समाजों द्वारा आर्थिक सहयोग की सम्भावनाएँ कम थी। इन बातों पर विचार करते हुए सभा ने इस वर्ष के श्रावणी कार्यक्रम सामान्य रूप में मनाने का विचार किया। इसी कारण से उत्तर भारत से विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमंत्रित नहीं किया गया। जो भी एक-दो विद्वान पधारे थे, वे भी उनकी वेदप्रचार की इच्छा से ही !

सभा ने अपने ही महाराष्ट्र प्रांत के स्थानीय विद्वानों व भजनोपदेशकों को वेदप्रचार करने का आग्रह किया और उन्हें जगह-जगह की आर्यसमाजों में प्रचार हेतु भेजा। वेदप्रचार के कार्यक्रम भी पाँच या तीन दिनों के ही दिये गये। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए प्राप्त परिस्थितियों में सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों तथा आर्य कार्यकर्ताओं ने इस वर्ष के श्रावणी पर्व हेतु पूरा सहयोग दिया। अनेकों आर्यसमाजों में उत्साह के साथ कार्यक्रमों के आयोजन हुआ और उन्होंने वेदप्रचार उत्सव मनाकर अपनी परम्परा को जीवित रखा।

वेद प्रचार के इस पवित्र कार्य में आप सभी को काफी कष्ट उठाने पड़े। विद्वानों को असुविधाएँ हुई होगी। आर्यसमाजों को भी अपनी इच्छा के अनुसार कार्यक्रम नहीं मिले होंगे ? फिर भी बड़ी उदारता का परिचय देते हुए आप सभी ने श्रावणी वेदप्रचार उत्सव के आयोजन किए। इसलिए हम बड़े ही कृतज्ञ भाव से आप सभी के हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट करते हैं।

—० आपके ही कृतज्ञ-आभारोत्सुक—०—

डॉ. ब्रह्ममुनि माधव देशपाण्डे उन्नसेन राठौर लक्ष्मण आर्य गुरुजी
(प्रधान) (मन्त्री) (कोषाध्यक्ष) (वेदप्रचार अधिष्ठाता)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परळी-वैजनाथ

समाचार दर्पण आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से दि.५ जून से १९ जून के दौरान सार्वदेशिक आर्य वीरदल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। समापन एवं दीक्षान्त समारोह का आयोजन एम.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग के प्रांगण में हुआ। १५ दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में देश के विभिन्न राज्यों से ३५० आर्यवीरों ने बड़े ही उत्साह के साथ प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया, जिन्हें हरियाणा, उ.प्रदेश, राजस्थान एवं ओडीसा से पधारे शिक्षकों ने प्रशिक्षित किया। शिविर का संचालन डॉ.स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के निर्देशन में हुआ।

समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सांसद डॉ.सत्यपाल सिंह जी एवं श्री प्रवेश वर्मा जी उपस्थित थे। एम.डी.एच. के चेअरमैन महाशय धर्मपालजी तथा मुंजाल शोवा लि. के चेअरमैन श्री योगेशजी मुंजाल भी उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित आर्यवीरों को सांसद श्री स्वामी सुमेधानंदजी सरस्वती ने सम्बोधित किया। उन्हीं के शुभ करकमलों से पुरस्कार दिये गये तथा अध्यापकों को सम्मानपत्र प्रदान किये गये। समारोह में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रकाशजी आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान धर्मपालजी आर्य, आचार्य विजयपालजी, देवन्द्रपालजी वर्मा, सत्यानंदजी आर्य आदि उपस्थित थे। अंत में सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने सभी के प्रति आभार प्रकट किये।

धुलिया में ध्यानयोग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज, कुमारनगर, धुलिया में दि.१ से ५ अप्रैल तक 'क्रियात्मक ध्यानयोग शिविर' उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रसिद्ध योग प्रचारक स्वामी अमृतानन्दजी सरस्वती ने उपस्थित योगप्रेमियों को ईश्वर, जीव, प्रकृति के सम्बन्ध व उनके महत्त्व को बड़े ही सरल ढंग से समझाया। मन क्या है ? उस पर कैसे नियंत्रण किया जा सकता है ? क्रोध का मूल कारण क्या है ? इन प्रश्नों के सम्यक् समाधान के साथ ही ईश्वरभक्ति, आध्यात्मिक साधना, योगमय जीवन आदि विषयों पर स्वामीजी ने साधकों मार्गदर्शन किया। शिविर में शहर के प्राध्यापक, प्राचार्य, अध्यापक तथा व्यापारी एवं सामान्य योग प्रेमियों ने सहभाग लिया। आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्णलालजी भगत, मंत्री वधवाजी, योगमुनिजी, डॉ.संजय सदाणे, प्रा.अखिलेश शर्मा, सौ.संध्याजी, सौ.सुष्माजी, चंदाजी आदियों ने शिविर की सफलता के लिए पूर्ण सहयोग दिया।

बसवकल्याण में हु.धर्मप्रकाश बलिदान दिवस सम्पन्न

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानी एवं बसवकल्याण के वीर सुपुत्र हुतात्मा धर्मप्रकाशजी का ७८ वा बलिदान दिवस दि.४ जुलाई २०१६ को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। प्रातः ९ बजे आर्य समाज भवन से भव्य शोभायात्रा निकाली गयी, जिसमें अनेकों आर्य नर-नारी 'हु.धर्मप्रकाशजी अमर रहे' के जयकारे लगाते हुए और साथ ही राष्ट्रभक्ति के गीत गाते हुए सम्मिलित हुए।

यह शोभायात्रा नगर के मुख्य मार्ग से निकली। हुतात्मा धर्मप्रकाशजी का जिस स्थान पर बलिदान हुआ, उस चोराहे पर स्वामी सांख्यायनजी सरस्वती के करकमलों से ओम् ध्वजा फहराई गयी। तत्पश्चात् सभी ने मिलकर हुतात्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजली समर्पित की। अंत में हु.धर्मप्रकाश विद्यालय में पहुंचकर स्मृतियज्ञ किया गया। पं.सुधाकरजी शास्त्री के पोरोहित्य में सम्पन्न हुए इस यज्ञ में यजमान के रूप में श्री जितेंद्र एवम् सौ.राधिका मेहताजकर सम्मिलित हुए। इस अवसर पर अनेकों मान्यवर उपस्थित रहे और उस महान आर्य क्रान्तिवीर के विचारों व कार्यों को याद किया।

आर्य समाज में मुख्य समारोह

मुख्य बलिदान समारोह आर्य समाज के प्रांगण में सभागार में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुभाषजी आष्टीकर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी सांख्यायनजी, पं.सुधाकरजी शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं.प्रतापसिंह चौहान आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्वान वक्ताओं ने अपने ओजस्वी विचार रखे। मुख्य वक्ता डॉ.नयनकुमारजी ने भाषण में राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु हुतात्मा धर्मप्रकाशजी के क्रांतिकारी जीवन से प्रेरणा लेते हुए नवयुवकों तथा आर्यजनों को आगे आने का अनुरोध किया। समापन भाषण में श्री आष्टीकरजी ने कर्नाटक सभा की प्रचार गतिविधियों से श्रोताओं को अवगत कराया। समारोह में डॉ.प्रकाश कच्छवा ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का संचलन उपप्रधान श्री सुरेंद्रगीर गोस्वामीने किया। इस अवसर पर सर्वश्री नारायण चिट्ठी(सभा उपप्रधान), समाज के प्रधान नारायणराव बुन्ना, मंत्री भानुप्रसाद पांडे, उपमंत्री संजु जाधव, संयोजक माणिकराव लाड, कोषाध्यक्ष मारोती महेंद्रकर, प्रचारक शिवाजी जगताप, पुरोहित शंकरराव जाधव आदि उपस्थित थे। समारोह में कर्नाटक, महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश से अनेकों आर्य कार्यकर्ता सहभागी हुए।

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय

जीवन मूल्यों को

जन-जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)९६७/२०४९.

स्थापना ५ मार्च १९७७)



- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरुजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअण्णा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि)
- महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

मुक्ती म्हणजे काय ?

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् ।
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति ॥

(तैत्तेरीय उप.१/१)

जो जीवात्मा आपली बुद्धी व आत्मा यांमध्ये असणाऱ्या सत्य, ज्ञान व अनंत आनंदस्वरूप परमेश्वराला जाणतो, तो त्या सर्वव्यापक ब्रह्म्यामध्ये स्थित होऊन त्या विपश्चित म्हणजे अनंत विद्यायुक्त ब्रह्म्यासह सर्व सदिच्छांची प्राप्ती करून घेतो. अर्थात् ज्या-ज्या आनंदाची अभिलाषा तो बाळगतो, तो तो आनंद त्याला प्राप्त होतो. यालाच 'मुक्ती' असे म्हणतात.

दयानंद वाणी

आपसात फुट नको... !

पाच हजार वर्षांपूर्वी घडलेल्या महाभारतातल्या गोष्टी तुम्ही विसरलात काय ? महाभारतीय युद्धात लढणारे सारे वीर आपापल्या वाहनांवर बसूनच खाणेपिणे करीत असत. आपसातील यादवीमुळेच कौरव, पांडव व यादव यांचा सत्यानाश झाला. तोच यादवीचा रोग अजूनपर्यंत भारतीयांचा मागे लागला आहे. भयंकर राक्षस आमची मानगूट कधी सोडेल की नाही कोण जाणे ? की आर्यांना साऱ्या सुखांपासून वंचित करून तो त्यांना दुःख सागरात बुडवून टाकील ? आपल्या गोत्राची हत्या करणाऱ्या स्वदेशाचा विनाश करणाऱ्या, नीच व दुष्ट दुर्योधनाच्या दुष्ट मार्गाने आर्य लोक आजही चालले आहेत व आपल्या दुःखात भर घालीत आहेत. परमेश्वराने आम्हां आर्यांवर कृपा करावी आणि हा राजरोग नष्ट करावा.

(सत्यार्थप्रकाश-१० वा समुल्लास)

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात आर्य समाजाचे योगदान

- पं.रमेश तु.ठाकूर

भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीचा इतिहास जितका रोमांचकारी व गौरवशाली आहे. त्यापेक्षाही अधिक रोमहर्षक व विस्मयकारक इतिहास हैद्राबाद स्वातंत्र्य चळवळीचा आहे. 'मराठवाडा मुक्तिसंग्राम' हा खरा तर हैद्राबाद स्वातंत्र्य लढ्याचाच एक भाग ! कारण हैद्राबाद स्वातंत्र्य लढा ब्रिटिशांबरोबरचा नव्हता, हा लढा अन्यायकारी व जुलमी निझाम राजवटी विरुद्धचा लढा होता. तेलंगणा, आंध्र, मराठवाडा व उत्तर कर्नाटक यांचे मिळून निझामाची वेगळी राजवट, वेगळे संस्थान होते. या राज्यातील जनतेची प्रचंड पिळवणूक केली जात होती आणि यासाठी आपले संस्थान स्थिर राखण्यासाठी गरजेप्रमाणे निझाम सरकार ब्रिटिश राजवटीशी हात मिळवणी करित असे.

हैद्राबादचे संस्थान हे भारतातील सर्वात मोठे संस्थान होते. इंग्रजांच्या "फोडा आणि जोडा" या नीतीमुळे हिन्दू-मुस्लिम यांमधील दरी वाढविण्याचे काम केले जात होते. अशा निकट-भयानक स्थितीमुळे बहुसंख्य वर्ग उपेक्षित राहिला. संबंध देश स्वतंत्र करण्याची इच्छा राखणाऱ्या देशभक्त तरुणांची शक्ती, वेळ व पैसा यांचा अपव्यय

व्हायला कारण ठरू लागले. शासकीय अत्याचार, पारस्परिक वैमनस्य, विरोध शासनाच्या आश्रयाने अनेक प्रकारच्या बाधक व हानिकारक, अराजक तत्वांचा उदय होऊ लागला. प्रलोभने देऊन निम्न जातीच्या लोकांचे धर्म परिवर्तन अशा स्तरातील संघर्षांना तोंड देण्याची पाळी आली. अशा स्थितीत स्वातंत्र्य चळवळ अधिक स्थिर व यशस्वी बनविणे दुरापास्त होऊ लागले होते. या विषम परिस्थितीत शासनाच्या दुष्ट धोरणांचा बीमोड करून नागरी स्वातंत्र्य मिळविण्यासाठी प्रथम प्रयत्न आर्य समाजाने केला. धार्मिक, सामाजिक हानिकारक रुढी व परंपरांना बाजूस ठेवून मानव-धर्माचा, प्रेमाचा व कर्मयोगाचा मार्ग आर्य समाजानेच दाखविला. येणाऱ्या प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थितीशी मुकाबला करण्यासाठी व संघर्षरत राहण्यासाठी आर्य समाजाचे अनेक नेते प्रेरणादायी ठरले. यात पं.नरेन्द्रजी, भाई बन्सीलाल व भाई श्यामलाल यांचा विशेषत्वाने उल्लेख करावा लागेल. निझामाला समोरासमोर आव्हान देण्याचे सामर्थ्य या तिघांनी दाखवले. म्हणूनच हैद्राबाद राज्याचा म्हणजेच पर्यायाने मराठवाडा मुक्ती संग्रामाच्या इतिहासात आर्य समाजाचे स्थान महत्त्वपूर्ण असे आहे.

मराठवाडा, कर्नाटकातील बिदर, गुलबर्गा, रायचूर या जिल्ह्यात स्वातंत्र्य लढ्याच्या ठिणगीला विशाल ज्वालेचे रुप देत भडकावण्याचे काम भाई बन्सीलाल व भाई श्यामलाल बंधू-द्वयांनी केले. या बंधूंनी आपले जीवन सर्वस्व पणाला लावून स्वातंत्र्याचे बीजारोपण केले नसते, तर भारतीय स्वातंत्र्यानंतरही निझाम राज्य हा तिसरा देश भारताच्या ऐन मध्यात राहिला असता किंवा हे एक दूसरे कश्मीर बनले असते. हैद्राबाद मुक्ती चळवळ अधिक तीव्र धारदार करण्याचे काम भाई श्याम व बन्सी यांनी केले, श्यामलालजी यासाठी हौतात्म्यही पत्करले. यांच्या हौतात्म्यानंतरच सन १९४८ म्हणजे भारतीय स्वातंत्र्यानंतर एक वर्षाने हैद्राबाद संस्थानाची पारतंत्र्याच्या जोखडातून मुक्ती झाली. भारतीय स्वातंत्र्य लढ्याबद्दल तत्कालीन स्वतंत्र भारताचे पहिले गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल म्हणतात-

“आर्य समाजाने स्वातंत्र्य लढ्याची पार्श्वभूमी बनवली नसती, तर तीन दिवसात हैद्राबाद रियासत पोलिस कार्यवाहीने स्वतंत्र होऊ शकले नसते” ते पुढे म्हणतात -

“भाई बन्सीलाल यांना दिल्लीला बोलावून भारत सरकारने स्वतंत्र चर्चा व तत्कालीन परिस्थिती बाबतची बोलणे झाले नसते तरी हे काम तीन दिवसीय पोलीस कार्यवाहीत शक्य झाले नसते. हा पुरावाच मराठवाडा मुक्ती संग्रामातील आर्य

समाजाच्या योगदानाचे महत्त्व स्पष्ट करण्यास पुरेसा आहे.

हैद्राबाद अर्थात मराठवाडा मुक्ती संग्रामात १२००० (बारा हजार) आर्य समाजी सत्याग्रहींना जेल झाली होती. भारताच्या स्वातंत्र्य लढ्यातील रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, भगतसिंग असे अनेक क्रांतीवीर ज्यांनी आपल्या प्राणाच्या आहुती दिल्या. हे सर्व आर्य समाजीच होते. शिरे पंजाब, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानंद (ज्यांच्या पूर्णाकृती पुतळा आजही दिल्लीच्या चांदणी चौकात उभा असून तो आपल्या निधड्या छातीचे आजही स्मरण करून देत आहे) हे राष्ट्रीय नेते आर्य समाजीच होते ना ? महर्षि स्वामी दयानंदांनी (जे आपले समाजाचे संस्थापक आहेत) इ.स.१८७५ मध्ये “वैभव व विलासाने संपन्न परकीय राज्यापेक्षा झोपडीतील स्वराज्य अधिक श्रेष्ठ” ही उद्घोषणा करून स्वातंत्र्याचाच मूलमंत्र दिला होता.

या देशाच्या सर्वांगीण उन्नतीसाठी व हैद्राबाद राज्याच्या मुक्तीसाठी आर्य समाजाने उत्स्फूर्त लढा दिला. तत्कालीन नेते पं.विनायकराव विद्यालंकार, पं.नरेन्द्रजी, आंध्रचे त्यावेळचे मुख्यमंत्री आदरणीय चन्नारेड्डी या मान्यवरांनी भाई बन्सीलाल व भाई श्याम यांच्या कार्याची मुक्तकंठाने महती वर्णिली. या बंधू-द्वयांनी अविरत पायपीठ करून ३०० आर्य समाजांची स्थापना केली.

स्वातंत्र्यासाठी लढवय्ये तयार केले, जनजागृती केली, लोकांमध्ये आत्मविश्वास निर्माण केला. भाई बन्सी व भाई श्याम (दोघेही वकिली पास होते.) यांच्या प्रेरणेने जिल्हा गुलबर्गा, बिंदर जिल्हा, गुंजोटी पायगा हे भाग प्रभावित झाले. गावोगावी आर्य समाजांची स्थापना केली. १४ ते २० या वयोगटातील तरुण युवक कामाला लागले. त्यात माणिक प्रसाद, बंसी प्रसाद, गोपाल प्रसाद, रामप्रसाद, श्रीनिवासजी, अपसिंगेकर, श्री बुलबुले, दिगंबरराव पत्तेवार, दिगंबरराव पळनीटकर, केशवराव नेत्रगावकर, श्रीधराचार्य, माधवराव घोणशीकर, रामचंद्र तळेगांवकर, शेषरावजी वाघमारे, श्री वीरभद्रप्पाजी, दिगंबरराव देशमुख, गुंजोटीचे माणिक सिंहजी, श्री सायबा कवठे, गंगाराम आयनले, मारुतीराव सोमवंशी, मुकुंदराव साळुंके, तुळशीराम ठाकुर, चौधरी, दत्तोपंत, हंबीरराव चव्हाण, दत्तात्रयजी चव्हाण, वीरपक्षय्या स्वामी, बसप्पा आगसे, टोपणप्पाजी बवले, दासमय्या हरके (वेदप्रकाश), हरिश्चंद्र सूर्यवंशी(सध्याचे ९८ वर्षीय स्वामी श्रद्धानंदजी), सोनाबाई पाटील आदि किती जणांची नावे सांगावीत? या सर्वांनी आपापल्या परिसरात (गावी) आर्य समाजाची स्थापना करून चळवळी उभ्या के ल्या. आजचे के सर जवळगा(जि.उस्मानाबाद) हे ठिकाण ब्रिटिशांच्या अखत्यारीतील! या गावी या

तरुणांची शिबिरे होऊ लागली. शिबिरात तलवार, दांडपट्टा आदीची प्रशिक्षणे व्हायची. यातील अधिकांश शिबीरार्थी गुंजोटी ता.उमरगा येथील होते. गुंजोटी हे ठिकाण निझामसरकारचे पायग्याचे ठिकाण होते. निझामाची सर्व प्रकारची कार्यालये या छोट्या गावी होती. यामुळे या गावाने व येथील महिलांना अनन्वित छळांना तोंड द्यावे लागायचे. महिला आपल्या सोबत मिरची पूड स्वसंरक्षणासाठी ठेवायच्या. याच गावातील सोनाबाई पाटील (खरेच या सुवर्ण होत्या) या महिलेने पोलीस अधिकारी(अमीन) जो महिलांकडे वक्रदृष्टीने पाहायचा व अधिकाराचा दुरुपयोग करून उपभोगायचा. सायंकाळी हुरडा खाण्याचे आमंत्रण देऊन त्याच्या गुप्तांगावर वार करून त्यास संपवण्याचे क्रांतिकारी काम केले. ही माता गुंजोटीचीच होती. गावातील आर्य समाजामध्ये पितळी घंटा होती. आपात्कालीन स्थितीत घंटा वाजवली की गावातील सगळे तरुण जमा व्हायचे व भविष्याच्या, संरक्षणाच्या उपाय योजना करित. येथील या युवा वर्गांनीच ज्या देवालयचे (हेमाडपंथी) मशिदीत रूपांतर करण्यात आले होते ते परत प्राप्त केले. ज्याचा लढा परवापर्यंत हायकोर्टापर्यंत लढला व पुराव्यानिशी ते मंदिरच असल्याचे सिद्ध करून न्यायानेही प्राप्त केला.

निझाम सरकारला आर्य समाज व त्याचे

कार्य आव्हानात्मक वाटू लागले. नवीन शाळांवर बंदी घालण्यात आली. परिसरात उमरगा, औराद, कदेर, बेडगा, माडज, नाई चाकुर, मोगरगा, उस्मानाबाद, बडूर, निलंगा, हणमंतवाडी, अंबुलगा, उजेड, साकोळ, वलांडी, उदगीर, लातूर, गुंजोटी, देगलूर परिसरातील अनेक गावे येथील आर्य समाजांनी आपापल्या ठिकाणी क्रांतिकारी चळवळी, जनजागृती सुरू केली. या साऱ्याचा परिणाम म्हणून हैद्राबाद राज्यातील सर्व आर्य समाजांना एकत्रित ठेवण्यासाठी इ.स.१९३१ मध्ये हैद्राबादेत प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभा स्थापन करण्यात आली. भाई बन्सीलालजी या सभेचे प्रधानमंत्री झाले.

याच काळात (सन १९३८) भाई बन्सीलालजी गुंजोटीस येत असल्याची सूचना मिळाली. गुंजोटीतील तरुणांचा एक गट सकाळीच स्वागतासाठी उमरगा येथे आला. कारण सोलापूर-हैद्राबाद ही बस उमरगावरून (उमरगा-गुंजोटी अंतर अवघे तीन कि.मी.) जायची. दुपारपर्यंत बस आली नाही म्हणून काही युवक जेवणासाठी परत आले. या युवकांचे नेतृत्व कोष्टी (विणकर) समाजातील दासमय्या या युवकाकडे होते. यास सर्व शस्त्रास्त्रे कौशल्यपूर्ण रीतीने वापरता येत. दासमय्या घरी आला व तलवार बाजूस ठेवून जेवण्यासाठी बसला. परिसरातील निझामचे रझाकार दासमय्याच्या पाळतीवरच

होते. तो एकटा घरी आल्याचे लक्षात घेऊन ते संघटीत झाले. अंदाजे अशा २०० रझाकारांचा गट पुढील(विपरीत) नारे देत दासमय्याच्या घराकडे निघाला. “जो बोलेऽसोऽअभय, वैदिक धर्म की जया, भाई बन्सीलाल की जया” इत्यादी. जेवत असलेल्या दासमय्यास बन्सीलालजींची मिरवणूक निघाली असे वाटल्याने जेवण अर्धवट सोडून निःशस्त्र धावतच घराबाहेर आला. नेमके हेच त्या गुंडांना हवे होते. सुमारे २०० जण असलेल्या गुंडांनी दासमय्यास घेरण्याचा प्रयत्न केला. एकटाच असल्याने निसटण्याचा प्रयत्न करीत एका घरातून उडी मारून जाण्याचा प्रयत्न केला, दुर्दैवाने त्याचे धोतर भिंतीवरील खुंटीस अडकल्याने तो खाली पडला व विनासायास गुंडांच्या हाती पडला. त्यास धर्मांतर करण्याचा आग्रह केला पण या मानी तरुणाने नकार दिल्याने साऱ्यांनी मिळून अक्षरशः ठेचून-ठेचून मारले. तो दिवस ४ मार्गशीर्ष सन १९३८ हा होता, नागदिव्याचा दिवस ! हैद्राबाद राज्यातला स्वातंत्र्य लढ्यातला पहिला बळी ठरला.

अशा रीतीने गुंजोटी गावाने आपल्या बलिदानाने स्वातंत्र्य यज्ञातील पहिली आहुती दिली. हा लढा या बलिदानाने अधिक उग्र झाला. यानंतर बसवकल्याण व हुमनाबाद येथून असेच बलिदान झाले. हुमनाबादचे शिवचंद्र त्यापैकीच एक होते. स्वातंत्र्य

लढ्याला अधिक गती मिळाली. याच काळात बसवकल्याणच्या आर्य समाजाच्या मंत्र्यांना मारहाण करण्यात आली. त्यात सत्यनप्पाचा मृत्यू झाला. अंबुलग्यात 'सत्यार्थ प्रकाश' वाचनामुळे महादेवची हत्या केली. चिटगोप्याचा नामदेव व त्याच्या पत्नीवर अत्याचार, धुलपेठ येथे स्त्रियांचा अपमान, हिंदूंना मारहाण, बसवकल्याण येथील धर्म पक्राशची हत्या, हुपळेचे पाटील यांची हत्या, टाळेगाव येथे यांचे हातपाय तोडले, उस्मानाबाद जवळील एका गावच्या युवकाची हत्या, निझामाबाद येथे हिंदूवर अत्याचार, निलंग्यातील आर्य समाज पाडले, कंधार येथील हिंदूंची लूट, कळंब येथे गायीची हत्या, उमरी येथे तिघांना दगडाने ठेचून मारले, अशा घटनांना उत आला. निझामाची स्थिती पिसाटल्यासारखी झाली. अशा घटनांनी आर्य समाजांचीही सहनशक्ती संपत चालली. बंसीभाई व श्यामभाईंनी आर्य प्रतिनिधी सभेची विशेष बैठक बोलावली. यावेळी सभेचे प्रधान बॅ. विनायकराव विद्यालंकार हे होते. याच काळात केशवराव कोरटकरांचे निधन झाले. निझाम सरकारातील परिस्थिती सादर करण्यासाठी भाई बन्सीलाल यांना सार्वदेशिक प्रतिनिधी सभा दिल्ली येथील बैठकीस गेले. या बैठकीत सार्वदेशिक आर्य सुरक्षा समिती बनविण्यात आली. या समितीचे शिष्टमंडळ १२ ऑक्टोबर रोजी हैद्राबाद येथे नवाब मेहंदीयार जंग

यांना भेटले. पण तोंडी आश्वासनाशिवाय काहीच मिळाले नाही. याच काळात भाई बन्सीलालजींनी वकिली सोडून सामाजिक व राजकीय कार्यात सक्रीय भूमिका पार पाडण्याचा निश्चय केला. बन्सीलालजी सभेचे मंत्री असतांना निझामाकडे एक निवेदन पाठविले होते. त्यात त्यांनी सभेच्या पुढील मागण्या मांडल्या होत्या.

१. आर्य समाजाच्या प्रचारकांवरील सर्व निर्बंध हटवावेत.

२. सर्व पंथांच्या मिरवणुका व उत्सवांना परवानगी देण्यासाठी सारखे धोरण अवलंबवावे.

३. तपासणी न करता धार्मिक साहित्य जप्त करू नये.

४. सार्वजनिक सभेसाठी परवानगी देण्याबाबत भेदभाव केला जाऊ नये.

५. आर्य समाज मंदिर व मस्जिद यांना एकसारखे पवित्र स्थळ समजावे.

६. आतापर्यंतच्या निष्कासन आदेशावर न्यायालयाने पुनः विचार करावा.

यावर विचार करण्यासाठी एक महिन्याचा अवधी देण्यात आला. यावर पुनः स्मरणपत्रही देण्यात आले. पण निझामाने याबाबत कोणताही निर्णय घेतला नाही.

आर्य समाजाने आपले कार्य (चळवळ) त्याच जोमाने चालू ठेवले. सार्वदेशिक आर्य

प्रतिनिधी सभा दिल्लीचे प्रतिनिधी महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतंत्रानंदजी आणि आचार्य रामदेव हे हैद्राबाद राज्यात आले. अनेक ठिकाणी यांची भाषणे झाली. पोलिसांनी कोठेही अडकाठी केली नाही. सर्वांना हायसे वाटले. पण हे सर्व निझामाचे नाटक होते. कारण वरील मंडळी दिल्लीला परत जाताच 'पुन्हा येरे माझ्या मागल्या' सुरु झाले. पुन्हा अत्याचारास सुरुवात झाली. निलंगा येथील आर्य समाज व हवनकुण्ड तोडण्यात आले. उई साप्ताहिक 'वैदिक आदर्श' बंद करावयास भाग पाडले. उदगीरच्या आर्य समाजच्या उत्सवात भाग घेतलेल्या अनेकांना भाडोत्री गुंडामार्फत मारहाण करण्यात आली. उदगीरचे माधवराव श्रीनिवासराव, श्री प्रल्हादजी, पं.कर्मवीरजी, रतनलालजी, माणिक प्रसाद, अमृतराव, दिगंबरराव, जगन्नाथराव, केशवराव, गुडसूरचे हणमंतराव पाटील, लातूरचे डी.आर.दास (नंतरचे उत्तममुनी) आदींना मारहाण करण्यात आली. बसवकल्याणचे गोपालदेव, गोविंदराव, मंगलदेव आदी सर्व मंडळींनी व त्यांचे नातेवाईक आदींना अत्याचाराचे शिकार व्हावे लागले. यामुळे सार्वदेशिक सभेचाही सहनशीलतेचा बांध फुटला. २ सप्टेंबर १९३४ हा दिवस संबंध भारतात 'हैद्राबाद दिवस' म्हणून साजरा करण्याचे ठरवले. पुढे चार वर्षे सतत प्रयत्न चालूच राहिले. सामोपचाराने प्रश्न सोडवला जावा,

म्हणून प्रयत्न केले. शेवटी सार्वदेशिक सभेनेही पुढील मागण्याचे निवेदन देण्याचा ठराव घेतला. हे निझाम सरकारकडे सादर केले. त्यात

१. धार्मिक व्यवस्थेबाबतचे नियम रद्द केले जावेत.

२. गश्ती निशान ५३ नियम रद्द करावा.

३. व्यायाम शाळेबाबतचा नियम रद्द करावा.

४. अशासकीय शाळांवरचा प्रतिबंध उठवला जावा.

५. सांप्रदायिक दंग्यांची चौकशी भेदभाव न करता करावी.

६. चौकशी केल्याशिवाय पुस्तके जप्त केली जाऊ नयेत.

७. प्रचारकांच्या येण्या-जाण्यावर बंधने लादली जाऊ नयेत.

८. वृत्तपत्रांच्या प्रकाशनासाठी अनुमती दिली जावी.

९. हिन्दू-मुस्लिमांचे सण एकाच वेळी साजरे होत असतील तर दोघांनाही स्वातंत्र्य द्यावे.

१०. मागील दंग्यांची भेदभाव न करता चौकशी केली जावी.

११. यज्ञशाळा, हवनकुंड बनविण्यासाठी पूर्व परवानगी घेण्याचा कायदा रद्द केला जावा.

१२. कैदेत आणि शाळेत आमिष देऊन धर्मपरिवर्तन केले जाऊ नये.

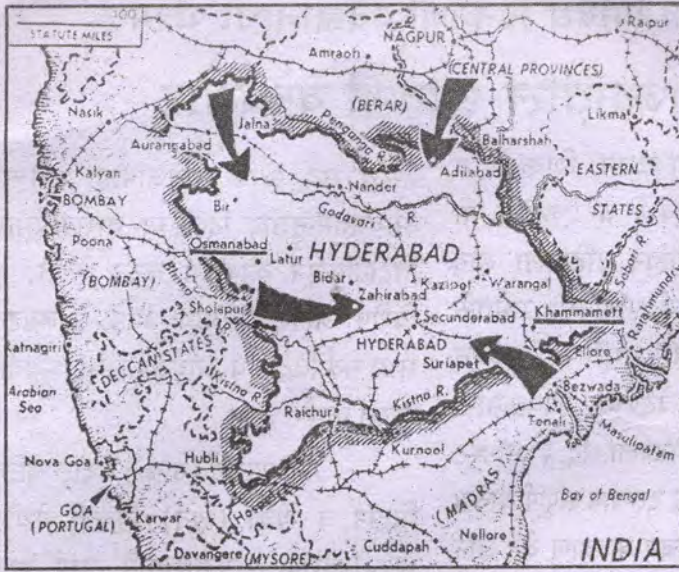
१३. शासकीय कर्मचाऱ्यांमध्ये जे आर्य आहेत, त्यांच्याशी कठोरपणाचा व्यवहार केला जाऊ नये.

१४. ओ३म् ध्वजा फडकवण्याचे स्वातंत्र्य द्यावे.

या चौदा मागण्या जनतेच्या हक्काच्या मागण्या होत्या.

आर्य समाज विविध रुपात स्वातंत्र्य लढ्यात, विशेषतः हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात सहभागी होता. यामुळे निझाम सरकारची अवस्था ब्रिटिश सरकार प्रमाणेच केविलवाणी झाली होती. चिडून बऱ्याच वेळा अनपेक्षित कृती करण्यास ते आपल्या अधिकाऱ्यांना भाग पाडायचे. त्यातच भाई श्यामलालना बिदरच्या जेलमध्ये टाकले. जेलमध्ये त्यांचा अनन्वित छळ सुरू केला. इंग्रजांनी इंग्लंडमधील जेलमध्ये वासुदेव बळवंत फडक्यांचा जसा छळ केला तसे नेमक्या याच काळात गुंजोटीच्या वेदप्रकाश, बसवकल्याणच्या. धर्मप्रकाश, हुमनाबादच्या शिवचंद्र आदींचा छळ केला गेला व त्यांची हत्या झाली. या सर्व कारणांमुळे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली यांनी १५ दिवसांचे अल्टिमेटम निझाम सरकारला पाठविले. शेवटी सत्याग्रहाचे अंतिम रणशििंग फुंकण्यात आले. २१ जानेवारी १९३९ रोजी

‘हैद्राबाद दिवस’ साजरा करण्याचे ठरवले. सत्याग्रहास सुरुवात झाली. राज्यात अटकसत्र सुरू झाले. सत्याग्रहाचा पहिला त्या ३१ जानेवारी १९३९ रोजी पाठविण्यात आला. ४ फेब्रुवारी १९३९ रोजी महात्मा नारायण स्वामी यांना सर्वाधिकारी म्हणून पाठविण्यात आले. त्यांना सत्याग्रहींसोबत गुलबर्गा येथे अटक करण्यात आली. दुसरे सर्वाधिकारी म्हणून राजस्थानचे आर्य नेते चांदकुंवर शारदा, तिसरे सर्वाधिकारी म्हणून श्री खुशहाल चंदजी खुर्सन अर्थात् महात्मा आनंद स्वामीजींना पाठविण्यात आले. ही मालिका चालूच राहिली. सत्याग्रहाने देशव्यापी रूप धारण केले. केवळ भारतातूनच नव्हे तर नैरोबी, ब्रह्मदेश येथूनही सत्याग्रही येऊ लागले. त्यावेळचे आर्य समाजाचे युवा सम्राट पं.नरेंद्रजी यांना निझाम सरकारने सत्याग्रह प्रारंभ होण्यापूर्वीच अटक करून हैद्राबाद राज्याच्या काळ्या पाण्याची शिक्षा समजल्या जाणाऱ्या मन्नानूरच्या जेलमध्ये टाकले. हा सत्याग्रहाचा आगडोंब केवळ आर्य समाजामुळे उसळला होता. सोलापूरहूनही सत्याग्रही पाठविण्यात येऊ लागले. निझाम सरकार खरे तर आतून घाबरून गेले होते. या देशव्यापी व देशाबाहेरील चळवळीने ब्रिटिश पार्लमेंट व यूरोपच्या वृत्तपत्रांनाही हादरवून सोडले. सत्याग्रहींच्या तुकड्या वेगवेगळ्या भागांतून येतच होत्या. आठव्या तुकडीचे (जत्थ्याचे) सर्वाधिकारी म्हणून



बसवकल्याण,
राजेश्वर,
हुमनाबाद बस
स्टॅंड, सस्तापूर,
डालिंबचा डाक
बंगला या ठिकाणी
आय समाजाच्या
कार्यकर्त्यांनी
तिरंगा फडकवला.
सर्व व्यापक
झालेल्या या
चळवळीमुळे व
सरदार वल्लभभाई

बॅ.विनायक दामोदर सावरकर तीन हजार सत्याग्रहींसोबत सहभागी झाले. ही सर्व परिस्थिती लक्षात घेऊन निझाम सरकारने सुधारणांची घोषणा करण्याचे नाटक केले. वास्तविक निझाम सरकार पुरते हताश झाले होते. त्यातच १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी ब्रिटिशांनी भारत स्वतंत्र करून भारतातून पळ काढला. परिणामी मराठवाडा, कर्नाटक, तेलंगणा, आंध्रप्रदेश संयुक्त अशी निझामी राजवट पुरती हादरून गेली. याच काळात माडीं ता.उमरगा येथील गणपतपराव पाटील यांचेवर अशांती पसरविण्याचा खोटा व केविलवाणा आरोप केला. गुंजोटीच्या आर्य समाजाच्या वार्षिकोत्सवासाठी परवानगी नाकारली. १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी व नंतर निझामाच्या आधिपत्याखालील

पटेल (गृहमंत्री, भारत सरकार) यांनी केलेल्या पोलीस ॲक्शनमुळे दि.१७ सप्टेंबर १९४८ रोजी निझामाच्या अन्यायी राजवटीतून हैद्राबाद संस्थानही स्वतंत्र झाले व ते भारतात विलीन झाला. या स्वातंत्र्य संग्रामातील आर्य समाजाचे हे भरीव योगदान सुवर्णाक्षरांनी नोंदण्यासारखे आहे.

(लेखक हे गुंजोटी येथील श्रीकृष्ण विद्यालयाचे निवृत्त शिक्षक व मु.अ. असून त्यांचे वडील श्री तुळशीराम ठाकूर हे ताम्रपत्र धारक स्वातंत्र्यसैनिक होते.)

— गजानन महाराज मंदिर परिसर,
गारखेडा, संभाजीनगर(औरंगाबाद)

मो.९४२३१७८८०३

राज्यातील श्रावणी वेदप्रचार

वैदिक तत्वज्ञान शिकणे व शिकविणे, तसेच ऐकणे व ऐकविणे या आर्य समाजाच्या महान उद्दिष्टाला साद घालत महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे दरवर्षीप्रमाणे याही वर्षी आयोजित राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमांना चांगलाच प्रतिसाद मिळाला. दि. ३ ऑगस्ट ते ३१ ऑगस्ट २०१६ दरम्यान संपूर्ण श्रावण महिन्यात 'मानव जीवन कल्याण वेद ज्ञान प्रचार अभियान' राबविण्यात आले. सभेशी संलग्न असलेल्या महाराष्ट्रातील लहान-मोठ्या अशा जवळपास १००हून अधिक आर्यसमाजांना विद्वान पाठविण्यात आले होते. यावर्षी राज्यातील गंभीर दुष्काळी परिस्थिती, पाण्याची भीषण समस्या व नुकत्याच सभेतर्फे पार पडलेल्या १६ ज्येष्ठ आर्यसेवकांच्या गौरव समारंभामुळे निर्माण झालेली आर्थिक अडचण लक्षात घेऊन यावर्षी साधेपणाने श्रावणी कार्यक्रम घेण्यात आले. बाहेरील प्रांतातून दोन-तीन विद्वानांनाच आमंत्रित करण्यात आले होते. पण स्थानिक मराठी विद्वानांनी मोठ्या श्रद्धेने व तितक्याच उत्साहाने श्रावणी वेदप्रचारात भाग घेतला. परप्रांतीय विद्वान व भजनोपदेशकांची उणीव भासू दिली नाही.

तसेच सर्व आर्य समाजांनीही सभेच्या आवाहानानुसार दिलेल्या तारखांप्रमाणे विद्वानांकडून कार्यक्रम करून घेतले. ही विशेष आनंदाची बाब आहे. याबबद्दल सभा सर्व विद्वान व आर्यसमाजांचे धन्यवाद व्यक्त करते.

गाजियाबाद (उ.प्र.) येथील वैदिक विद्वान व खंडा (खुर्द)-दिल्ली येथील भजनोपदेशक पं.प्रकाशमुनी आर्य यांनी अनुक्रमे धर्माबाद, हदगाव, परळी, किल्लेधारूर, लातूर(गांधी चौक) व धुळे येथे वेदप्रचाराचे कार्य केले. या ठिकाणी श्रोत्यांनी मोठ्या प्रमाणात हजेरी लावली होती. सहारनपुर (उ.प्र.) येथील विद्वान पं.सुखपालजी आर्य यांनी देगलूर, शहापुर, उदगीर, लातूर(रामनगर), औराद शहाजानी, निलंगा व सोलापूर येथील आर्य समाजात आयोजित श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात वेदविषयक विविध मूल्यांचे प्रतिपादन केले. त्यांच्या सोबत आलेल्या भजनोपदेशकांनी भजने सादर केली. सभेचे उपदेशक पं.सुधाकरजी शास्त्री यांनी पुणे येथील नानापेठ व वारजे मालवाडी तसेच नाशिक, जळगाव, नशिराबाद, इदगांव, मालेगाव, औरंगाबाद इत्यादी ठिकाणी

वेदप्रचाराचे कार्य केले. सभेचे मंत्री श्री माधवराव देशपांडे यांनी उमरगा तालुक्यातील औराद, गुंजोटी, माडज या गावांसह उस्मानाबाद, वाशी आदी ठिकाणी जाऊन वेदप्रचार केला. त्यांचे समवेत त्यांच्या धर्मपत्नी सौ. नलिनी देशपांडे यांनी प्रबोधन केले. पुण्यातील प्रसिद्ध आर्यसमाज पिंपरी येथील श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात अहमदाबादचे वैदिक विद्वान पं. चंद्रेशजी शास्त्री यांनी सखोल असे मार्गदर्शन केले. तर भजनोपदेशक पं. हेमंत आर्य यांनी विविध भजने सादर करून श्रोत्यांची मने जिंकली.

सोलापूरचे वैदिक विद्वान पं. राजवीरजी शास्त्री व त्यांचे सहकारी भजनीक पं. अरुणकुमार सांगळे यांनी परभणी, नांदेड, मुदखेड व रेणापूर येथील आर्यसमाजात आयोजित श्रावणी उत्सवात विविध विषयांवर प्रभावीपणे मार्गदर्शन केले. लातूरचे विद्वान पं. श्रीरामजी आर्य (जाधव) व सभेचे भजनोपदेशक पं. प्रतापसिंहजी चौहान यांनी हिंगोली व नांदेड जिल्ह्यातील अनेक गावात जाऊन अत्यंत उत्तम रितीने वेदप्रचाराचे कार्य केले. त्यांनी सादर केलेल्या भजन व प्रवचनांना ग्रामीण भागातील श्रोत्यांनी भरभरून प्रतिसाद दिला. मराठी भाषेतून अभिव्यक्त वेदज्ञानामुळे श्रोते चांगलेच प्रभावी झाल्याचे दूरध्वनीवरून समजले. या दोन्ही विद्वानांनी हिंगोली, जरोडा, येहळेगाव, मरडगा, शिऊर, शेंबाळ

पिंपरी, तळणी, निवघा, तामसा, कंजारा आदी ठिकाणी आर्य समाजामध्ये, विविध मंदिरे व शाळा-महाविद्यालयात प्रबोधनाचे कार्य केले. परळीचे प्रा. श्री अरुण चव्हाण व पं. अशोक कातपुरे यांनी अंबाजोगाई व शिवणखेड येथे प्रचाराचे कार्य केले. तसेच प्रा. डॉ. वीरेंद्र शास्त्री व त्यांच्या धर्मपत्नी सौ. वीरश्री शास्त्री यांनी करडखेल येथे चांगल्या प्रकारे वैदिक धर्मप्रचार केला. लोहारा येथे देखील श्री शास्त्रीजींनी मार्गदर्शन केले.

सभेचे वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, भागवतराव आघाव, स्वामी सम्यक् क्रांतिवेशजी यांनी घटांग्रा, राणी सावरगाव, मांडवा व सारडगांव येथे जाऊन वैदिक विचारांचे औचित्य व सुखी जीवनासाठी वेदज्ञानाची गरज या विषयावर श्रोत्यांचे प्रबोधन केले. पं. तानाजी शास्त्री व लक्ष्मीकांतजी सोन्नर यांनी घाटनांदूर व माजलगांव येथे शाळा-महाविद्यालयात व आर्यसमाजात प्रबोधन केले. श्री आर्यमुनिजी व पं. सोगाजी घुन्नर यांनी अजनी, दैठणा, धनेगांव, वलांडी, टाकळी, मोगरगा, मंगरुळ आदी ठिकाणी जाऊन वेदप्रचार केला. पं. शिवाजी निकम व प्रकाशजी कच्छवा तसेच आचार्य सत्येंद्रजी यांनी मदनसुरी, येलमवाडी, हलगरा, बोटकूळ, सय्यद अकुलगा, उजेड येथे प्रचाराचे कार्य केले. पं. वशिष्ठजी आर्य

यांनी हनुमंतवाडी, कासारशिरसी, बडूर, नदीवाडी आदी ठिकाणच्या आर्यसमाजांना व शाळांना भेटी देऊन सर्वांचे प्रबोधन केले. पं.सोममुनिजी यांनी ईट, घाटपिंपरी आदी ठिकाणी जाऊन वेदज्ञान प्रसाराचे कार्य केले. प्राचार्य देवदत्त तुंगार यांनी उमरी व तरोडा येथे प्रबोधन केले. पं.चंद्रकांतजी वेदालकार यांनी जितूरला शाळा-महाविद्यालयात विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले. सौ.डॉ.वसुंधरा गुडे यांनी मुशिराबाद येथे व्याख्यान दिले. प्रा.चंद्रेश्वरजी शास्त्री व त्यांच्या धर्मपत्नी सौ.कांचनदेवी यांनी सुगाव येथे कार्यक्रम घेतले. लातूरचे प्रा.शरदचंद्रजी डुमणे व पं.शेरसिंहजी शास्त्री यांनी बिबराळ (ता.औसा) येथील आर्यसमाजात आयोजित श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात व्याख्याते म्हणून भूमिका बजावली. परळीचे प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी अजनी, अंबुलगा, येलदरी, अंधोरी या गावात जाऊन वेदप्रचाराचे कार्य केले. श्री विज्ञानमुनिजी व पं.विश्वनाथ महाजन यांनी कदूर, बेडगा आदी ठिकाणी वेदप्रचार कार्य केले. नांदेडचे विद्वान पं.नारायणराव कुलकर्णी कंधार व मुखेड येथील वेदप्रचाराची धुरा सांभाळली. पं.माणिकरावजी टोम्पे यांनी साकोळ, नेत्रगांव येथे तर डॉ.नरेंद्रजी शिंदे व प्रा.सोमवंशी हाळी व हेर येथे विद्वान म्हणून वेदप्रचार केला. श्री आर्यमुनिजी यांनी प्रारंभी सुखपालजी आर्य यांच्या समवेत धर्माबाद,

देगलूर व उदगीर येथे प्रचारकार्य केले. त्याचबरोबर इतर विद्वान पंडितांनी देखील किठिकाणच्या आर्यसमाजामध्ये जाऊन वेदज्ञान प्रसारित करण्याचे कार्य केले. पं.व्यंकटरावजी कुल्ले व विजयपालजी यांनी चाकुर व वडवळ नागनाथ येथे जाऊन वेदप्रचार केला.

अशा प्रकारे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे राज्यभरात आयोजित श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमांना उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. या कार्याबद्दल सभेचे मार्गदर्शक स्वामी श्रद्धानंदजी, प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवराव देशपांडे, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, वेदप्रचार अधिष्ठाता लक्ष्मणराव आर्य आदींनी आमंत्रित सर्व विद्वान, भजनोपदेशक व आयोजक सर्व समाजाच्या आर्य पदाधिकाऱ्यांचे व कार्यकर्त्यांचे आभार मानले आहेत.

योगशिविराचे आयोजन

परोपकारिणी सभा अजमेरच्या वतीने महर्षी स्वामी दयानंदांच्या बलिदान दिनानिमित्त दि.१२ ते १९ ऑक्टोबर २०१६ दरम्यान भव्य स्वरूपात योग साधना शिविराचे आयोजन करण्यात आले आहे. अजमेर येथील ऋषी उद्यानात होणाऱ्या या शिविरात अधिकाधिक संख्येने भाग घ्यावा. संपर्क-०१४५-२४६०१६४(कार्यालय)

स्वा.सै.बाबाराव बिराजदार यांचे निधन



निलंगा तालुक्यातील हनुमंतवाडी येथील आर्यसमाजाचे प्रधान व माजी सरपंच स्वा.सै.श्री.बाबाराव संभाजीराव बिराजदार (पाटील) यांचे दि.२० ऑगस्ट २०१६ रोजी रात्री ७.३० च्या सुमारास वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ९२ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे तीन मुले, दोन मुली, सूना, जावई व नातवंडे

असा भरगच्च परिवार आहे.

श्री बिराजदार यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात मोठ्या उत्साहाने भाग घेतला होता. आर्यसमाजाच्या क्रांतिकारी नेत्यांच्या सान्निध्यात राहून त्यांनी राष्ट्रप्रेम, वैदिक सिद्धांत, सामाजिक बांधिलकी, शैक्षणिक सेवा व राजकारणाचे धडे घेतले होते. आर्य समाजाबरोबरच काँग्रेस पक्षाचेही ते एकनिष्ठ कार्यकर्ते होते. माजी मुख्यमंत्री डॉ.शिवाजीराव पाटील निलंगेकरांचे ते निष्ठावान अनुयायी मानले जातात. हनुमंतवाडीच्या आर्यसमाजाचे ते गेल्या १५ वर्षांपासून प्रधान, ५ वर्षे सरपंच, तर ५ वर्षे अंबुलगा(बु.) सर्कल विविध कार्यकारी सेवा सोसायटीचे चेअरमन म्हणून त्यांनी काम पाहिले. अंबुलगाच्या रामचंद्र शिंदे शिक्षण प्रसारक मंडळाचे ते अध्यक्षही होते. परिसरातील एक कट्टर आर्यसमाजी म्हणून त्यांची ओळख होती. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. हनुमंतवाडी आर्यसमाजाचे मंत्री भानुदासराव बिराजदार, अंबुलगाचे मंत्री चंदरभाई सगर व मोगरगाचे मंत्री श्री शिवाजीराव निकम आदींनी हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी मोठा जनसमुदाय उपस्थित होता.



सौ.कांचनदेवी अग्रवाल यांचे देहावसान

परभणी येथील आर्यसमाजाच्या सक्रिय कार्यकर्त्या व प्रधान श्री विजयकुमारजी अग्रवाल(गुप्ता) यांच्या सुविद्य धर्मपत्नी सौ.कांचनदेवी अग्रवाल यांचे दि.३ सप्टेंबर २०१६ रोजी सकाळी ९.४५ वा. अल्पशः

आजाराने दुःखद निधन झाले. त्या ५५ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे पती, तीन मुले सर्वश्री अजय, सागर, संजय, एक कन्या सौ.राधिका अतिशकुमार अग्रवाल(जालना), सुना-जावई, नात-नाती असा विशाल परिवार आहे.

सौ.कांचनदेवी गेल्या एका महिन्यापासून काविळ या आजाराने ग्रस्त होत्या. त्यांच्यावर औरंगाबाद व परभणी रुग्णालयात उपचार करण्यात आले. कुटुंबियांनी प्रयत्नांची अथक पराकाष्ठा केली, पण दुर्दैवाने त्यांनी अखेरचा श्वास घेतला. त्यांच्या पार्थिवावर परळीचे विज्ञानमुनिजी, प्रा.वीरेंद्र शास्त्री, पं.दिगंबर देवकते, पं.बाबुराव आर्य, पं.सुरेश, रमेश व विश्वजीत शास्त्री यांनी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार केले. तत्पूर्वी त्यांच्या इच्छेप्रमाणे नेत्रदान करण्यात आले. तिसऱ्या दिवशी घरी शांतियज्ञ करण्यात आला. तर १२ दिवस घरी पं.दयानंद आर्य व पं.दिगंबर शास्त्री यांनी वेदकथा केली.

दिवंगत सौ.कांचनदेवी या अत्यंत मनमिळावू, सेवाभावी, कुटुंबवत्सल, पतिपरायणा व धार्मिक वृत्तीच्या होत्या. घरी येणाऱ्या विद्वान अतिथींचा आदरसत्कार त्या अतिशय श्रद्धेने करीत. आर्य समाजाच्या कार्यात त्यांनी आपल्या पतिदेवांना मोलाची साथ दिली. त्यांच्याच प्रेरणेने आर्यसमाजाचे सर्व कार्य व समारंभ त्यांच्या मंगलकार्यात निःशुल्क होत असत. नुकत्याच पार पडलेल्या श्रावणी वेदप्रचार उत्सवात आपल्या प्रकृतीची चिंता न करता त्यांनी मोठ्या हिरीरीने भाग घेतला होता. अशा एका आदर्श गृहिणीच्या जाण्याने अग्रवाल कुटुंबावर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे, तर आर्य समाज परभणीची मोठी हानी झाली आहे.

पं.शक्तिसिंह आर्य(रहेकवाल) यांचे निधन

किल्लेधारू येथील आर्यसमाजाचे सदस्य व आर्य भजनोपदेशक पं.शक्तिसिंहजी आर्य(रहेकवाल) यांचे गुरुवार दि.८ सप्टेंबर २०१६ रोजी रात्री ११.३० वा. च्या सुमारास अपघाती निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ६२ वर्ष वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात पत्नी, दोन मुले, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

पं.शक्तिसिंह हे गुरुवारी सायं.५ वा. धारू शहरातील मुख्य मार्गावरून दुचाकी वाहनाने जात असतांना समोरून येणाऱ्या दुचाकीने धडक दिली व त्यामुळे घडलेल्या गंभीर अपघातात ते जखमी झाले. निकटवर्तीयांनी त्यांना ताबडतोब लातूर येथील खाजगी रुग्णालयात दाखल केले. डॉक्टरांनी अथक परिश्रम केले, तरी त्यांना यश आले नाही. श्री शक्तिसिंह हे ग्रामीण भागातील एक प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक होते. प्रांतीय सभेच्या श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात व इतरही सभासमारंभात ते उत्साहाने सहभागी होत व भजने सादर करीत. त्यांच्या स्वतः रचलेल्या हिंदी-मराठी भजनांचा प्रभाव श्रोत्यांवर पडत

असे. यामुळे एक प्रकारे आर्यसमाजाचा प्रचार व प्रसार होण्यास मदत मिळे. गेल्यावर्षी त्यांना हृदयविकाराचा झटका आला होता. त्यांच्यावर शस्त्रक्रियाही करण्यात आली होती. अशाही अवस्थेत ते वैदिक धर्माच्या प्रचारासाठी उत्सुक होते.

दिवंगत रहेकवाल यांच्या पार्थिवावर धारूरच्या आर्यसमाजाचे प्रधान श्री प्रमोदकुमार तिवारी, मंत्री अॅड.प्रमोद मिश्रा, कोषाध्यक्ष कमलाकर इंदुरकर, उद्धव खाडे, थोरात गुरुजी, श्री जवकर यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

सौ.मीनाक्षी चैतन्य रडे यांचे निधन

आर्य समाज नशिराबाद (ता.जि.जळगांव) चे मंत्री श्री चैतन्य रडे यांच्या सहधर्मचरिणी सौ.मीनाक्षीदेवी रडे यांचे दि.९ सप्टेंबरला सकाळी ११.१५ वा. अल्पकालीन आजाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या अवघे ४४ वर्षे वयाच्या होत्या. गेल्या एक-दोन वर्षांपासून त्या जलोदराने तर अलीकडील काळात विषमज्वराने पीडित होत्या.

सौ.रडे यांनी आपले पति श्री चैतन्यजींच्या पावलावर पाऊल ठेऊन विशुद्ध वैदिक विचारांचे अनुसरण केले. राज्य व राज्याबाहेरील विविध ठिकाणच्या सभा-संमेलने, उत्सव आदी कार्यक्रमात त्या आपल्या पतीसमवेत उत्साहाने सहभागी होत असत. परळीच्या गुरुकुलात कांही दिवस राहून त्यांनी वैदिक तत्त्वज्ञानाचे प्रशिक्षण घेतले होते. ध्यान योगशिविर, पुरोहित प्रशिक्षण शिविर व तसेच वार्षिकोत्सव कार्यक्रमात त्या नेहमी सहभागी झाल्या. नशिराबाद येथे वेदप्रचारासाठी गेलेल्या अनेक विद्वान व भजनीकांचा मुक्काम श्री व सौ.रडे यांच्या घरीच असायचा. त्यांच्या निवास व भोजनाच्या व्यवस्थेसोबतच परिसरातील वेदप्रचार कार्यक्रमाचे व्यवस्थापन ही या दाम्पत्याकडेच असे. ५-६ वर्षांपूर्वी घडलेल्या भयावह कार अपघातात सुदैवाने रडे दाम्पत्य बालंबाल बचावले होते. दुदैवाने अलीकडील २-३ वर्षांपासून सौ.मीनाक्षीदेवींना जलोदरासारख्या आजाराने ग्रासले व रुग्णावस्थेतून देखील तितक्याच उत्साहाने जीवन जगत राहिल्या. दिवंगत सौ.रडे यांच्या पार्थिव देहावर रात्री ९ वा. पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. संभाजीनगर (औरंगाबाद) येथील आर्यसमाजाचे कोषाध्यक्ष व प्रांतीय आर्यसभेचे आंतरजातीय विवाह मंडळ प्रमुख अॅड.जोगेंद्रसिंह चौहान, आचार्य सर्वेश शास्त्री, पंडितराव अटाळे, डॉ.पुरुषोत्तम सुवर्णकार आदींनी हा अंत्यविधी संपन्न केला. दुसऱ्या दिवशी ब्र.शेखर विशारद यांच्या पौरोहित्याखाली शांतीयज्ञ संपन्न झाला.

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना सभा व आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली !

भारताच्या संसद भवनात वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती यांची प्रतिमा बसविण्यात यावी, या मागणीसाठी खा.डॉ.सत्यपालसिंहजी यांच्या नेतृत्वाखालील एका शिष्टमंडळाने लोकसभेच्या सभापती श्रीमती सुमित्रा महाजन यांची भेट घेतली व त्यांना याकरिता निवेदन देण्यात आले. दि.८ ऑगस्ट २०१६ रोजी शिष्टमंडळाने १५१ खासदारांच्या सहाय्यांचे पत्र लोकसभाध्यक्षांना दिले व त्यांकडे संसद भवनात महर्षि दयानंदांची प्रतिमा व मूर्ती स्थापन करण्याची विनंती केली. (प्रतिमा व मूर्तींना आर्यसमाजाचा विरोध असला तरी लोकप्रतिनिधींना महर्षि दयानंदांचे व्यक्तिमत्त्व कळावे हा या मागचा उद्देश आहे.) शिष्टमंडळात सर्वश्री खा.चंद्रकांत खैरे(महाराष्ट्र), खा.जगदंबिका प्रसाद(उ.प्र.), प्रल्हाद जोशी(कर्नाटक), खा.डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक' (उत्तराखंड), खा.भाट्टरीहारी मेहताब(ओरिसा) यांचा समावेश होता. निवेदन सादर केल्यानंतर श्रीमती महाजन यांनी यावर सकारात्मक पाऊल उचलण्याचे आश्वासन दिले. या कामगिरीबद्दल खा.डॉ.सत्यपालसिंह यांचे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा व देशातील इतर प्रांतीय सभांनी अभिनंदन केले आहे.

परळीत संस्कृतदिन उत्साहाने साजरा

'मानवी जीवनाचे शाश्वत कल्याण संस्कृत या देवभाषेत दडले असून सद्यस्थितीत उद्भवणाऱ्या विभिन्न जागतिक समस्यांचे निराकरण संस्कृतच्या समृद्ध ज्ञानभांडारानेच होऊ शकते,' असे प्रतिपादन प्रा.डॉ.दिगंबर मुडेगांवकर यांनी केले. परळी येथील आर्यसमाजात ऑगस्ट महिन्यात पार पडलेल्या सामूहिक संस्कृत दिन समारंभात ते प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी माजी नगराध्यक्ष व संस्थेचे प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया हे होते. तर विशिष्ट अतिथी म्हणून सामाजिक कार्यकर्ते श्री दत्ताप्पा इटके हे उपस्थित होते.

श्री इटके यांनी संस्कृत भाषा माणसा-माणसाला जोडणारी असल्याचे सांगितले. यावेळी व्यासपीठावर सर्वश्री उग्रसेन राठौर, विठ्ठलअप्पा चौधरी, विज्ञानमुनीजी, भागवत आघाव, लक्ष्मणराव आर्य, जी.एस.सौंदळे आदींची उपस्थिती होती.

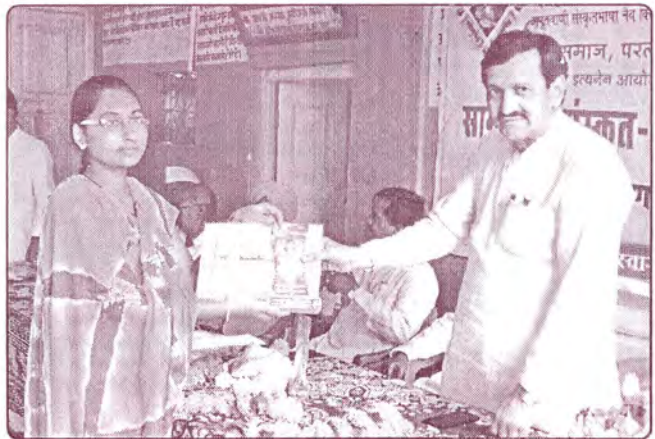
प्रास्ताविक पं.प्रशांतकुमार शास्त्री यांनी केले. याच कार्यक्रमात संस्कृत श्लोकगायन व भाषण स्पर्धेत यशस्वी ठरलेल्या विद्यार्थ्यांना पारितोषिकांचे वितरण करण्यात आले. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचलन प्रा.यु.के.नरवाडकर यांनी केले. तर आभार प्रा.अरुण चव्हाण यांनी मानले. कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी प्रा.नरेश कन्हैरे, सौ.पाटेकर, सौ.बक्षी, सौ.कते, तानाजी शास्त्री, व्यंकटेश शास्त्री, रंगनाथ तिवार, रुपेश शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, अभय तिवार, यज्ञप्रकाश हुलगुंडे, श्री मंत्री, राकेश आर्य आदींनी प्रयत्न केले.

सामूहिक संस्कृत दिवस समारोह-परली



समारोह में मार्गदर्शन करते हुए मुख्य अतिथि डॉ.दिगंबरजी मुडेगावकर । मंचपर आसीन हैं सर्वश्री दत्ताप्पा इटके, लोहियाजी, विज्ञानमुनिजी व लक्ष्मणराव आर्य ।

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में विजेत्री महाविद्यालयीन छात्रा को पुरस्कृत करते हुए आर्य समाज परली के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया ।



संस्कृत श्लोकगायन प्रतियोगिता में विजेत्री विद्यालयीन छात्रा को पुरस्कृत करते हुए आर्य समाज परली के मंत्री श्री उग्रसेनजी राठौर ।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा,
सेहत के प्रति जागरूकता,
शुद्धता एवं गुणवत्ता, करोड़ों
परिवारों का विश्वास, यह है
एम.डी.एच.का इतिहास जो
पिछले १० वर्षों से हर कसौटी
पर खरे उतरे हैं -जिनका कोई
विकल्प नहीं। जी हां यही हैं
आपकी सेहत के रखवाले -



लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !



मसाले
असली मसाले
सच-सच

आर्य जगत् के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त

महाशय धर्मपालजी



MAHASHIAN DI HATTI LTD.

Regd. Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,
Ph. : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com



REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली वैजनाथ.

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्र.देश में
आर्य समाज की गतिविधियों को बढ़ाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य

(प्रसिद्ध भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राली, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !



जीवेत
शरदः
शतम् !